श्री बाहुबली भगवान, श्री श्रवणबेलगोला जी

RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

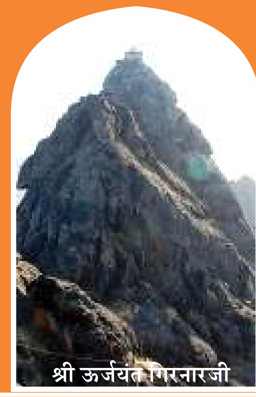

श्री ऊर्जयंत गिरनारजी

वर्ष : 15	अंक : 4	मुम्बई, जुलाई 2025	पृष्ठ : 32	मूल्य : ₹ 25	हिन्दी
VOLUME : 15	ISSUE : 4	MUMBAI, JULY 2025	PAGES : 32	PRICE : ₹ 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2551

200 वर्ष अति प्राचीन

अतिशयकारी, मनोकामनापूर्ति श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान, गुलालवाड़ी, मुंबई

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 15 अंक 4 जुलाई 2025

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
श्री उमानाथ रामअजोर दुबे

संपादकीय सलाहकार
डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली
डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद
डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन :

E-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : tirthkshetracommittee.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210110008627 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

वीर निर्वाण संवत् 2551

इस अंक में

चातुर्मास: तप, त्याग और धर्म का समर्पण पर्व 7

चातुर्मास के चार आयाम 8

देशव्यापी प्रगति के साथ 125 वर्षों के पायदान पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी 9

प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज एवं उनकी परम्परा 10

जैन धर्म और गिरनार, जूनागढ़, गुजरात 14

त्याग - तपस्या की प्रतिमूर्ति आचार्यश्री वर्द्धमानसागर जी महाराज 17

उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड अंचल की प्रबंधकारिणी समिति की कार्यवाही 20

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय पदाधिकारियों की बैठक संपन्न 25

नवागढ़ में पुरा संपदा का अन्वेषण एवं संरक्षण 27

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:
1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

सम्प्रदाय से पहले धर्म

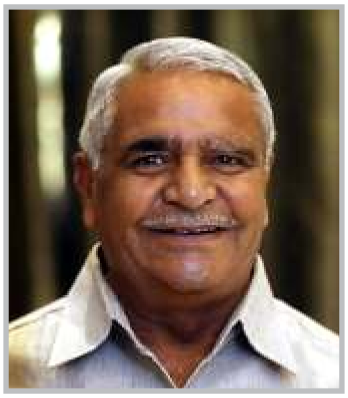

यत्र-तत्र-सर्वत्र वर्षायोग स्थलों पर साधुओं का आगमन हो चुका है। आगमों की आज्ञानुसार आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी से सावन कृष्ण पंचमी तक वर्षायोग स्थापना होती है। तदनुसार विगत 9-15 जुलाई के मध्य सभी साधुओं के वर्षायोग की स्थापना हो चुकी है।

श्वेताम्बर सम्प्रदाय में गण-गच्छ का विशेष प्रभाव रहता है किन्तु अब यह प्रवृत्ति दिगम्बर समाज में भी बढ़ गई हैं। पहले केवल दिगम्बर एवं श्वेताम्बर सम्प्रदाय थे। श्वेताम्बरों में भी मूर्तिपूजक, स्थानकवासी एवं तेरापंथ श्वेताम्बर का भेद रहता था। दिगम्बर में भी बीसपंथ एवं तेरापंथ का भेद तो 100-200 वर्षों से है किन्तु पारस्परिक मनोमालिन्य कभी नहीं रहा। सब एक दूसरे के आयोजनों में जाते थे, संतों की विनय करते थे किन्तु अब भेद बढ़ते जा रहे हैं। दिगम्बर एवं श्वेताम्बर के भेद के बाद अब तेरापंथी दिगम्बर जैन साधु, बीसपंथी मंदिर में नहीं जाते, नमस्कार नहीं करते। किन्तु अब बात उससे भी आगे निकल गई एवं साधुओं के अपने-अपने भक्त मंडल, मंच बनने लगे । कहाँ हमारे पूर्वाचार्य पिच्छी-कमंडलु देखकर नमस्कार करने, यानि मुनि मुद्रा को प्रणाम करने का आदेश देते थे वहीं आज साधुगण अपने-अपने भक्तों को केवल अपने पास ही आने तक सीमित करवाने का प्रयास करते हैं। यह स्थिति दिगम्बरत्व की प्रभावना के अनुकूल कदापि नहीं हैं। मैने देखा है कि कुछ श्रावक अपनी परम्परा के साधु के आगमन के समय प्रवेश शोभायात्रा, धर्म सभा, आहारचर्या, वैयावृत्ति आदि सभी में उत्साहपूर्वक बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं किन्तु दूसरी परम्परा के साधु के आगमन के समय वंदना करने भी नहीं जाते हैं।

श्रावकों की बात तो दूर संयम के पथ पर चलने वाले ब्रह्मचारी भाई-बहन तो दूसरी परम्परा के साधु के आने पर नगर ही छोड़कर अन्यत्र साधु दर्शन, विधान या अन्य कार्यक्रम में चले जाते हैं। यह कदापि उचित नहीं हैं। उनको तो आदर्श उपस्थित करना चाहिए। आज स्थिति जटिल होती जा रही है। ऋषभदेव-केशरिया जी में न्यायालयीन आदेशों के बाद भी हम अपने अधिकार से वंचित हैं। गिरनार जी में हमें पांचवी टोंक पर निर्वाण लाडू नहीं चढ़ाने दिया गया। सम्मेद शिखर जी में परस्पर विवादों के कारण आदिवासी बन्धु अनर्गल बातें कर रहे हैं। ऐसे में हमें अपने सम्प्रदायगत मतभेदों को भुलाकर धर्म को प्रमुखता देनी चाहिए।

आज सम्पूर्ण भारत में लगभग 1700 पिच्छीधारी संत वर्षायोग कर रहे हैं। मैं सभी के चरणों में विनयपूर्वक नमोस्तु/वंदामि/इच्छामि निवेदित कर यह अनुरोध करता हूँ कि दिगम्बरत्व/जैनत्व की प्रभावना एवं अभिवृद्धि का प्रयास करें। जब तक धर्म रहेगा तभी तक हमारी परम्परा, सम्प्रदाय या पंथ रहेगा। अतः **'धर्म प्रथम, सम्प्रदाय बाद में'** का नारा बुलंद करें। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि समान हित के मुद्दों जैसे जैन तीर्थों की सुरक्षा एवं विकास पर हम दिगम्बर-श्वेताम्बर भाइयों को भी एक हो जाना चाहिए। पालीताना हो या सम्मेदशिखर सभी की सुरक्षा एवं विकास हमारा धर्म हैं। हमने पूर्व में सल्लेखना के मुद्दे पर एकता दिखाई हैं। णमोकार दिवस पर भी हम सब एकजुट रहे हैं। अतः असंभव कुछ भी नहीं हैं। बस प्रयास इमानदारी से हो।

इस वर्षायोग में हमारा नारा हो
सम्प्रदाय से पहले धर्म।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

बंधुओं, भगनियों
सादर जय-जिनेन्द्र !

अत्यंत हर्ष और उत्साह है कि २३ वें तीर्थंकर देवादिदेव १००८ भगवान श्री पार्श्वनाथ जी का मोक्ष कल्याणक महोत्सव हम सभी को मनाने का सुअवसर प्राप्त होने जा रहा है भगवान् पार्श्वनाथ की निर्वाण तिथि मोक्ष सप्तमी (दिनांक ३१ जुलाई २०२५) को स्वर्णभद्र कूट (पारसनाथ टोंक) सम्मेदशिखरजी मधुबन में तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्त्वावधान में बड़े ही धूम-धाम के साथ निर्वाण महोत्सव मनाया जाता है जिसमें देश विदेश से लाखों श्रद्धालु उपस्थित रहकर इस अवसर के साक्षी बनते हैं।

तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी सम्मेदशिखर जी में यात्रियों की सुरक्षा व्यवस्था का विशेष ध्यान रखा जा रहा है साथ ही हम स्थानीय शासन-प्रशासन से भी अनुरोध कर उनकी सहायता लेकर इस दिन के लिए सुरक्षा और व्यवस्था को बढ़ावा देते हैं। जगह-जगह स्वागत प्रवेश द्वार (अभिनन्दन बोर्ड) एवं सूचना पटल लगाये जाते रहे हैं, साफ़ सफाई का उचित ध्यान रखा जा रहा है, स्वर्णभद्र कूट पर्वत के रास्ते एवं तलहटी मधुबन में लाईटे लगाकर साज-सज्जा का कार्य प्रारंभ हो चुका है। इसके अतिरिक्त तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से निर्वाण महोत्सव सम्मेदशिखरजी का सीधा प्रसारण टीवी चैनलों के माध्यम से दिखाया जाता है जिससे जो श्रद्धालु शिखरजी नहीं पहुँच पाते वह घर से ही इस अवसर का लाभ ले सकें।

चूंकि इन दिनों से सम्मेदशिखर जी में देश-विदेश से पधारने वाले तीर्थ यात्रिओं की संख्या में वृद्धि होने लगती हैं और प्रत्येक जैन श्रद्धालु की भावना होती है कि वो साल में एक बार शिखरजी अवश्य जाएं। अतः मैं शिखरजी पधारने वाले सभी तीर्थयात्रियों के पुण्य की अनुमोदना करता हूँ और कामना करता हूँ कि प्रत्येक दर्शनार्थी की तीर्थयात्रा निर्विघ्न संपन्न होवे ! साथ ही मेरा सभी तीर्थयात्रियों से विनम्र अनुरोध है कि श्री सम्मेदशिखर जी तीर्थ हम सभी का है और यहाँ की व्यवस्था में सहयोग करना हम सभी का कर्तव्य है, पर्वत पर किसी भी प्रकार का कूड़ा-कचरा, पानी की बोतले, पॉउच इत्यादि खाने-पीने की वस्तुएं इधर-उधर न फेंकें, क्योंकि पर्वत की साफ़-सफाई एवं पर्वत की पवित्रता को अक्षुण्ण रखना हमारा सर्वप्रथम दायित्व है, रास्ते में मिलने वाले खाने-पीने की वस्तुओं की खरीद करने से परहेज करें, साथ ही मेरी अपील है कि सम्मेदशिखर जी पर्वत पर यदि कोई भी आपत्तिजनक घटना घटती है तो कृपया उत्तेजित होकर कोई कदम न उठायें जिससे कोई विवादित घटना की उत्पत्ति होवे, हमें अपनी वाणी और अपने व्यवहार में संयम बरतना है साथ ही किसी भी प्रकार की शिकायत के लिए तलहटी, मधुबन कुंद-कुंद मार्ग पर स्थित तीर्थक्षेत्र कमेटी के शाखा कार्यालय में अपनी शिकायत लिखवाएं जिससे उसका निवारण विधिवत रूप से हो सके।

हमारे चलते फिरते तीर्थ कहे जाने वाली साधु-साध्वियों के चातुर्मास प्रारम्भ हो रहे हैं चातुर्मास के पावन प्रसंग पर जहाँ-जहाँ हमारे आचार्य, मुनि-महाराज, आर्यिया माताएं ससंघ विराजमान हो रहे हैं वहां पर चातुर्मास कलश स्थापित किये जा रहे हैं, मेरा सभी पूज्य आचार्यों, मुनिगणों एवं आर्यिका माताओं से नमोस्तु पूर्वक सविनय अनुरोध है कि आप सभी अपने प्रभाव से अपने प्रवचनों में समाज को तीर्थों के प्रति जागरूक होने के लिए उपदेश देकर प्रेरित करें। साथ ही समाज से अपील है कि आप भी तीर्थक्षेत्र कमेटी से जुड़कर अपने तीर्थों की सेवा में मुक्तहस्त से अपना सहयोग देकर असीम पुण्य का संचय करें एवं इस पावन चातुर्मास के सुअवसर पर कलश स्थापना के साथ **एक कलश तीर्थरक्षा कलश से स्थापित कराएं** जिससे प्राप्त राशि तीर्थक्षेत्र कमेटी के बैंक खातें में जमाकराकर कमेटी के पदाधिकारियों व मुंबई कार्यालय को सूचित करने की कृपा करें जिससे आपको रसीद भेजी जा सके !

अंत में हमारे सभी आचार्य, मुनि-महाराजों, आर्यिका-माताओं, एवं समस्त त्यागी व्रतियों के चतुर्मास निर्विघ्न संपन्न होवें इन्हीं मंगलभावनाओं के साथ आपका,

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

वर्षायोगः चिन्तन का एक अवसर

वर्षायोग 2025, 9 जुलाई से प्रारंभ होकर 20 अक्टूबर 2025 तक चलेगा। इन पंक्तियों के लिखे जाने के समय 6 जुलाई तक अनेक संत वर्षायोग के निमित्त अपने-अपने वर्षायोग स्थल पर पहुँच चुके हैं अथवा प्रवेश कर रहे हैं अथवा 1-2 दिनों में पहुँच जायेंगे। अधिकांश साधु वर्षायोग की स्थापना तो 9 जुलाई को ही भक्तियाँ पढ़कर दिशाबन्धन आदि कर लेंगे। अर्थात् धार्मिक क्रियायें तो उसी दिन कर लेंगे। किन्तु वर्षायोग की सभा कलश स्थापना, आदि बाद में समाज के लिए अनुकूल दिन देखकर रखते हैं। इस बार भी 13 जुलाई 2025 को रविवार होने के कारण अनेक स्थानों पर कलश स्थापना की सभायें हो रहीं हैं।

भारत में 1700 से अधिक पिच्छीधारी दिगम्बर संत मुनि/आर्यिका/ऐलक/क्षुल्लक/क्षुल्लिकायें हैं। वे सभी वर्षायोग करेंगे। इनकी विस्तृत सूची संस्कार सागर (पत्रिका) में प्रतिवर्ष प्रकाशित होती हैं। मैने भी 1999, 2000, 2001 आदि में दिगंबर जैन संतों की सूचियां प्रकाशित की थी किन्तु बाद में संस्कार सागर पत्रिका में व्यवस्थित रूप से प्रकाशित होने लगी तो मैंने इस कार्य को विराम दे दिया। इन्दौर नगर में भी इस वर्ष (2025) 19 स्थानों पर लगभग 100 दिगम्बर संतों का वर्षायोग हो रहा हैं।

यह प्रसन्न्ता की बात हैं। आचार्य श्री विभवसागर जी (नेमीनगर-24 पिच्छी), आचार्य श्री विनम्रसागर जी (पंचबालयति-विजयनगर 17 पिच्छी) एवं आचार्य श्री विशदसागर जी (सुदामानगर-8 पिच्छी) के संघों से महती धर्म प्रभावना प्रारंभ हो चुकी हैं। चरित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी की परंपरा के आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी (टोंक-36 पिच्छी) वर्षायोग हेतु टोंक नगर में पहुँच गये हैं। आचार्य श्री सुनीलसागर जी ससंघ अहमदाबाद एवं आचार्य प्रज्ञासागर जी कोटा में वर्षायोग हेतु पहुँच गये हैं।

प्रदर्शनमूलक आयोजनों को लेकर अनेक प्रबुद्ध श्रावक आलोचना भी करते हैं किन्तु कुछ वैकल्पिक समाधान प्रस्तुत किया जाये एवं उन पर अमल किया जाये तो ज्यादा उचित रहेगा।

मैं यहाँ वर्षायोग के निमित्त कुछ करणीय सुझाव प्रस्तुत कर रहा हूँ। वर्षायोग एक अवसर है हम सबको इसका लाभ उठाकर अपने जीवन/आत्मा को समृद्ध करना चाहिए।

1. पूज्य संतगण- वर्षायोग में संतों के पास थोड़ा समय होता हैं। बड़े संघों में वरिष्ठ संत एवं आचार्य की अधिक व्यस्तता रहती हैं।

शेष संत विहार आदि की प्रतिकूलताओं से मुक्त रहते हैं। वे तो अपना समय स्वाध्याय एवं लेखन में व्यतीत करते हैं। मैंने स्वयं देखा है अनेक संत धार्मिक अध्ययन के अलावा ग्रहस्थ जीवन में लौकिक शिक्षा के क्षेत्र में भी काफी सफलतायें अर्जित कर चुके हैं ऐसे संतों को धार्मिक/दार्शनिक विषयों के विश्लेषण, शोध प्रविधि, प्रस्तुतीकरण में सुविधा रहती है। आप युवा मन को बेहतर तरीके से समझते हैं।

अतः आप

I युवाओं के लिए उपयोगी धार्मिक साहित्य का सृजन कर सकते हैं।

II धार्मिक युवा संस्कार शिविरों का आयोजन कर सकते हैं।

III युवा मन की जिज्ञासाओं को युवाओं के समक्ष रख कर उनके तर्कपूर्ण, वैज्ञानिक दृष्टि सम्पन्न समाधान दिये जाने चाहिये। पर्युषण पर्व में शास्त्र प्रवचन एवं प्रातःकालीन प्रवचन युवाओं पर केन्द्रित होकर सरल सुबोध भाषा में होने चाहिए क्योंकि इनमें से अधिकांश युवा वर्ष भर में केवल इन्हीं दिनों मन्दिर में आते हैं।

IV प्राचीन ग्रंथों की आधुनिक शैली में व्याख्यायें तैयार कर सकते हैं।

V पूर्वाचार्य प्रणीत अप्रकाशित ग्रंथों का सम्पादन/अनुवाद कर सकते हैं।

ऐसे अनेक कार्य हैं। आमजन का मन तो मंडल विधानों में ही लगता है और वे भी होने चाहिए।

2. युवाओं से- पूज्य संतों से डरें नहीं, उनके निकट जायें, अपनी जिज्ञासा रखें एवं समाधान प्राप्त करें। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जैन धर्म अत्यन्त वैज्ञानिक एवं तर्कपूर्ण हैं।

कर्मकाण्ड होते जरूर हैं किन्तु उनका धर्म से वास्ता नहीं हैं। सभी संत कुछ त्याग की बात नहीं करते। संतों की कठोर जीवनचर्या एवं त्याग देखकर स्वयं त्याग का मन करता हैं। धर्म एवं विज्ञान परस्पर पूरक हैं। आज अनेक धार्मिक क्रियायों की विज्ञान की आधुनिक खोजों से पुष्टि हो रही हैं। जैसे खाद्य पदार्थों की उपयोगिता मर्यादा, सामयिक, ध्यान, योग की क्रियायें विज्ञान द्वारा पुष्ट हो रहीं हैं। प्रतिदिन मन्दिर जाने वाले अवसाद से बचते हैं। तनाव कम होता हैं। इसके विपरीत धर्म भी विज्ञान को रास्ता दिखा सकता हैं। गत 16 जून को मैं Indian Institute of Science, Bengaluru के परिसर में स्थित National Institute of Advanced Studies के वैज्ञानिक-दार्शनिक संवाद में सम्मिलित हुआ था। इस संवाद में उपस्थित लगभग 25 वैज्ञानिक एवं दार्शनिकों ने दिनभर वैज्ञानिक उलझनों पर दार्शनिकों के अभिमत जाने। परमाणु, समय एवं प्रदेष की परिभाषाओं एवं उनके स्वरूप पर विज्ञान के सम्मुख अनेक उलझनें हैं। जैन दर्शन के विवेचन उनके प्रेक्षणों के बहुत निकट हैं किन्तु अब तक जैन दर्शन का पक्ष वहाँ ठीक से रखा नहीं गया। इसे संतों से समझें।

वैज्ञानिक पृष्ठ भूमि के जैन संतों को इन उलझनों के बारे में जानकारी प्राप्त कर उन पर जैन दर्शन का दृष्टिकोण स्पष्ट करना चाहिए, युवाओं को भी बताना चाहिए, इससे हमारे युवा का स्वाभिमान बढ़ेगा एवं वे गौरव को अनुभूति होंगे। अब तक जैन दर्शन का दृष्टिकोण वैज्ञानिकों के समक्ष प्राभावी रीति से प्रस्तुत ही नहीं किया गया है। पूज्य संतों का सामीप्य तनाव मुक्ति एवं कैरियर सुधार का बड़ा माध्यम है।

3. तीर्थों के प्रबंधकों से – तीर्थ हमारी आत्मा है, दिगम्बरत्व की शान है। जब दिगम्बर मुनिराज या आर्यिका मातायें वहां विराजती हैं तो उनकी शोभा द्विगुणित हो जाती है। जिन तीर्थों पर वर्षायोग हो रहे हैं वे सौभाग्यशाली हैं। तीर्थ के पदाधिकारी पूर्ण मनोयोग एवं भावों से वर्षायोग करावे। इससे तीर्थ का प्रचार-प्रसार होगा, यात्रियों का आवागमन बढ़ेगा। नियमित आय बढ़ेगी। आने-वाले भक्तों में से कुछ ऐसी योजनायें हस्तगत कर लेंगे जिससे क्षेत्र को बहुत फायदा होगा। संतो का वर्षायोग कभी भी घाटे का कारण नहीं बनता। आपको केवल आने-जाने वाले तीर्थयात्रियों के भोजन-आवास एवं संतों के आहार आदि की समुचित व्यवस्थाएं करनी होती हैं।

4. महिलाओं से – हमारी बहिने समाज की रीढ़ हैं। समाज के धार्मिक कार्य, अनुष्ठान बहिनों के सहयोग के बिना संभव ही नहीं है। वर्षायोग में तो बहिनों की केन्द्रीय भूमिका होती है। वरिष्ठ महिलायें जहाँ-जहाँ वर्षायोग हो रहे हैं वहां चौका प्रशिक्षण शिविर आयोजित करें। समाज के सामान्यजनों, महिलाओं को भी वर्षायोग में करने को बहुत कुछ हैं।

आइये हम सब मिलकर वर्षायोग को सार्थक करें।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

Mysterious Bilpan - The ancient glory of Devbalda (Baitul, MP) which is still calling today...

चातुर्मास: तप, त्याग और धर्म का समर्पण पर्व

- आचार्य अतिवीर मुनिराज

भारत की आध्यात्मिक परंपराओं में जैन धर्म का स्थान विशिष्ट है। जैन साधु-संतों की तपस्या, अहिंसा, अपरिग्रह और आत्मानुशासन की मिसालें आज भी जीवन को दिशा देने वाली हैं। इन तमाम मूल्यों और सिद्धांतों का सघन अभ्यास जिस अवधि में सबसे ज़्यादा देखने को मिलता है, वह है चातुर्मास। वर्षा ऋतु के चार महीनों की वह विशेष अवधि, जब साधु-साध्वियाँ एक ही स्थान पर स्थिर रहते हैं और श्रावक-श्राविकाएँ धर्म में विशेष रुझान के साथ भाग लेते हैं। चातुर्मास केवल एक ऋतु नहीं है; यह साधना का काल है, आत्मचिंतन की घड़ी है, आत्मा की चिकित्सा का अवसर है।

चातुर्मास का आध्यात्मिक सार और साधुओं के लिए उसका महत्व

प्राचीन जैन आगमों में चातुर्मास को एक अत्यंत पावन और आवश्यक समय बताया गया है। सामान्यत: दिगम्बर और श्वेताम्बर साधु-संत वर्ष के अधिकांश समय में नगर-नगर, ग्राम-ग्राम विचरण करते हैं। किंतु वर्षा ऋतु में जब धरती पर असंख्य जीवों की उत्पत्ति होती है—जैसे कि कीड़े, पतंगे, सूक्ष्म जीवाणु—तब अहिंसा के सिद्धांत को सर्वोपरि रखते हुए साधु एक ही स्थान पर ठहर जाते हैं। यही ठहराव 'चातुर्मास' कहलाता है।

इस स्थिरता में ही साधना की तीव्रता है। साधु इन महीनों में ध्यान, स्वाध्याय, प्रवचन, प्रत्याख्यान और आत्मानुशासन के माध्यम से अपने तप का विस्तार करते हैं। जैन साधु न केवल स्वयं की साधना में लीन होते हैं, बल्कि समाज को धर्म का प्रकाश भी प्रदान करते हैं। उनका हर प्रवचन, हर उपदेश, हर आचरण समाज के लिए दिशा-दर्शक बनता है।

श्रावक-श्राविकाओं के लिए चातुर्मास का महत्व

जहाँ एक ओर साधु-संत अपनी आत्मा को माँजते हैं, वहीं दूसरी ओर श्रावक-श्राविकाओं के लिए भी यह समय आत्मिक उत्थान का अवसर होता है। चातुर्मास के दौरान जैन समाज में उपवास, प्रतिक्रमण, दशलक्षण पर्व, पर्युषण महापर्व, तपस्याएँ, ध्यान-धारणा, और प्रवचनों की परम्परा होती है। लोग अपने जीवन में संयम लाते हैं—भोजन की सीमाएँ निर्धारित करते हैं, रात्रि भोजन त्यागते हैं, आलस्य से दूर रहते हैं।

परिवारों में धार्मिक चर्चाएँ होती हैं। छोटे बच्चे भी 'संयम क्या है', 'अहिंसा क्यों ज़रूरी है', और 'सत्य की महिमा' जैसी बातों को समझने लगते हैं। चातुर्मास केवल चार महीनों का आयोजन नहीं होता, यह जीवन के भीतर आध्यात्मिक धड़कन जगाने का काल होता है।

वक्त के साथ बदली चातुर्मास की तस्वीर

हालांकि चातुर्मास की यह परम्परा शताब्दियों से चली आ रही है, लेकिन आज समाज के एक बड़े वर्ग के लिए इसका स्वरूप धुंधला पड़ता जा रहा है। समय, सुविधाएं और सोच तीनों में आया परिवर्तन इस बदलाव के लिए ज़िम्मेदार हैं।

एक समय था जब जैन समाज पूरे वर्ष इस प्रतीक्षा में रहता था कि कौन से साधु हमारे नगर में चातुर्मास करेंगे। मन्दिरों की शोभा बढ़ जाती थी। श्रावक अपनी गृहस्थी की चिंताओं से ऊपर उठकर साधुओं की सेवा और धर्म-अनुष्ठानों में तल्लीन हो जाते थे। साधु के चरण जिस नगर में पड़ते, वहाँ धर्म की वर्षा होती थी।

परन्तु अब स्थिति बदल रही है। कई स्थानों पर मन्दिर समितियाँ चातुर्मास के आयोजन से पीछे हट रही हैं। कारण पूछने पर जवाब मिलता है—"व्यवस्था बहुत कठिन है", "लोग समय नहीं देते", "कोई रुचि नहीं लेता"। इन उत्तरों में आधुनिक समाज की धर्म से दूर होती सोच झलकती है।

क्यों घट रही है चातुर्मास की प्रतिष्ठा समाज में?

चातुर्मास की उपेक्षा के पीछे कई सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारण हैं:

- भौतिकवाद की ओर झुकाव – आधुनिक जीवन में व्यावसायिकता, लाभ-हानि, सुविधा और स्वार्थ इतने हावी हो गए हैं कि धर्म अब एक 'ऐच्छिक' विकल्प बन गया है, कोई 'अनिवार्य' मूल्य नहीं।
- सेवा को बोझ मानना – पहले जहां साधु-संतों की सेवा को सौभाग्य माना जाता था, अब इसे एक सामाजिक या आर्थिक बोझ समझा जाने लगा है।
- सामाजिक विघटन – एक ही समाज के भीतर गुटबाजी, वैचारिक टकराव और निजी अहंकार चातुर्मास जैसे आयोजनों को बाधित कर रहे हैं।

● प्रवचन को महत्त्व नहीं देना – जहाँ पहले साधु के प्रवचन को 'जीवन मंत्र' माना जाता था, आज समाज का बड़ा वर्ग प्रवचन के समय अपने मोबाइल में व्यस्त रहता है।

● साधुओं की बढ़ती आकांक्षाएं - जहां पहले साधु वर्ग का उद्देश्य केवल मनोमंजन का होता था, वहीं आज कहीं ना कहीं मनोरंजन भी हावी होता जा रहा है। एक से बढ़कर एक आयोजनों की श्रृंखला समाज में प्रभावना के स्थान पर उदासीनता ला रही है।

समाज की भूमिका और पुनरुद्धार की आवश्यकता

चातुर्मास को पुनः उसकी गरिमा में स्थापित करने के लिए समाज को जागरूक और सक्रिय होना होगा। यह कार्य केवल मन्दिर समितियों या कुछ बुज़ुर्गों की ज़िम्मेदारी नहीं है, बल्कि संपूर्ण समाज की भागीदारी से ही यह संभव है।

समाज को समझना होगा कि चातुर्मास साधुओं के ठहरने मात्र की अवधि नहीं, बल्कि यह हमारी आत्मा को झकझोर कर उसे मोक्ष मार्ग की ओर उन्मुख करने का एक अवसर है।

● **युवाओं को जोड़ें:** चातुर्मास में धार्मिक शिविरों, स्वाध्याय प्रतियोगिताओं और डिजिटल माध्यमों से युवाओं को जोड़ा जाए।

● **मन्दिरों को जीवन्त बनाएं:** मन्दिर को केवल पूजन का स्थान नहीं, बल्कि ज्ञान, चर्चा, सेवा और साधना का केन्द्र बनाएं।

● **संतों की सेवा को सौभाग्य समझें:** जब हम एक साधु को एक स्थान पर ठहरने का आग्रह करते हैं, तो हम केवल किसी अतिथि को आमंत्रित नहीं करते; हम आत्मज्ञान को आमंत्रित करते हैं।

चातुर्मास—धर्म का उत्सव, आत्मा का उत्सव

चातुर्मास केवल परम्परा नहीं, वह चेतना है। वह जागरण है आत्मा का, वह अवसर है मुक्ति की ओर एक कदम बढ़ाने का। हमें यह समझना होगा कि जैसे वर्षा धरती को सींचती है, वैसे ही चातुर्मास आत्मा को सींचने वाला मौसम है।

समाज जब तक चातुर्मास को केवल "चार महीनों की साधु सेवा" मानता रहेगा, तब तक वह इसके वास्तविक लाभ से वंचित रहेगा। पर जब यह समाज इसे आत्मिक पुनरुत्थान का पर्व मानेगा, तब हर मन्दिर में धर्म की ज्योति पुनः प्रज्वलित होगी।

आइए, इस वर्ष के चातुर्मास में हम सब मिलकर एक नई शुरुआत करें—एक ऐसी शुरुआत जो हमारी आत्मा को जिनवाणी के प्रकाश से आलोकित कर दे।

चातुर्मास के चार आयाम

प्रो.अनेकांत कुमार जैन

चातुर्मास वह है जब चार महीने चार आराधना का महान अवसर हमें प्रकृति स्वयं प्रदान करती है।अतः इस बहुमूल्य समय को मात्र प्रचार में खोना समझदारी नहीं है।

चातुर्मास के चार मुख्य आयाम हैं - सम्यक् दर्शन ,ज्ञान ,चारित्र और तप।

इन चार आराधनाओं के लिए ये चार माह सर्वाधिक अनुकूल रहते हैं , आत्मकल्याण के सच्चे पथिक इन चार माह को महान अवसर जानकर मन-वचन और काय से इसकी आराधना में समर्पित हो जाते हैं। आगम में भी कहा गया है -

उज्जोवणमुज्जवणं णिव्वाहणं साहणं च णिच्छरणं।
दंसणणाणचरित्तं तवाणमाराहणा भणिया।
(भगवती आराधना / गाथा 2)

अर्थात् सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र व सम्यक्तप इन चारों का यथायोग्य रीति से उद्योतन करना, उनमें परिणति करना, इनको दृढ़ता पूर्वक धारण करना, उसके मंद पड़ जाने पर पुनः पुनः जागृत करना, उनका आमरण पालन करना आराधना कहलाती है।

आधुनिकता और आत्ममुग्धता के इस दौर में जब चातुर्मास के मायने मात्र मंच,माला,माइक और मीडिया तक ही सीमित करने की नाकाम कोशिशें हो रहीं हों तब ऐसे समय में हमें उन शाश्वत मूल्यों को अवश्य याद रखना चाहिए जिनकी संवृद्धि के लिए चातुर्मास आते हैं।

आपको स्मरण होगा चातुर्मास के दौरान ,विशेषकर दशलक्षण पर्व में तत्त्वार्थसूत्र के स्वाध्याय का बहुत महत्त्व है ,उसके आरम्भ में मंगलाचरण से भी पूर्व कुछ पद्य पढ़े जाते हैं ,उनमें भी यह गाथा पठनीय होती है।

एक गृहस्थ को भी यथासंभव ये चार आराधनायें करणीय हैं। हमें लाख उपाय करके भी सबसे पहले सम्यग्दर्शन आराधना प्राप्त करना है ,उसके लिए वीतरागी आप्त ,आगम और तपस्वी के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा रखते हुए ,देह और आत्मा की भिन्नता का अनुभव करते हुए अपने शुद्ध आत्मतत्त्व की पहचान करनी है उसे जानना है।

सम्यग्ज्ञान आराधना में आप्त के वचनों को ,उनके गूढार्थ को ,भावार्थ को स्याद्वाद नय से , स्वाध्याय के माध्यम से वस्तु स्वरूप का सही ज्ञान प्राप्त करते हुए भेद विज्ञान को प्राप्त करना है।

सम्यग्चारित्र आराधना में यथासंभव व्रतादि संयम का पालन करते हुए आत्मा की अनुभूति में उतरना है।

सम्यक्तप आराधना में अन्तरंग और बहिरंग तप का सच्चा स्वरूप समझकर बाह्य प्रतिकूलताओं को समता पूर्वक सहकर अपने मन को धर्म में स्थिर रखने का प्रयास करना है,आत्म ध्यान का अभ्यास करना है।

यह महज़ सिर्फ़ एक संयोग नहीं है कि आत्मा की आराधना की मुख्यता वाले अधिकांश आध्यात्मिक पर्व भी इन्हीं चार महीनों में ही आते हैं।

यही कारण है कि महापुराण (5.231,19.14-16)पांडवपुराण (19.263, 267) आदि ग्रंथों में भी कहा है कि ये चार आराधनायें भव सागर से पार होने के लिए ये नौका स्वरूप हैं। अनेक महाविद्याएँ भी आराधना से प्राप्त होती हैं।

वास्तविक धर्म प्रचार और प्रभावना भी वे ही कर पाते हैं जो सच्चे मन से आराधनायें करते हैं। वर्ष में बारह मास होते हैं ,उसमें भी मुख्यता से आठ महीने धर्म का प्रचार और चार महीने धर्म का आचार -ये संतुलन यदि रखें तो हम दोनों कार्य बहुत सफलता से कर सकते हैं।किन्तु हम इन चार महीनों को भी मात्र प्रचार में झोंक दें तो खुद से ही धोखा करेंगे और किसी से नहीं।

देशव्यापी प्रगति के साथ 125 वर्षों के पायदान पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

-डॉ. जीवन प्रकाश जैन, हस्तीनापुर

सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज के लिए एक सिरमौर संस्था बनकर तीर्थक्षेत्रों के प्रति समर्पित ''भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी-मुम्बई'' एक ऐसी संस्था है, जिसकी स्थापना 22 अक्टूबर सन् 1902 में हुई। तब से लेकर लगातार अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए यह संस्था विभिन्न कार्यकालों में विभिन्न अध्यक्षों व पदाधिकारियों के नेतृत्व से गुजरते हुए आज हम सबके समक्ष अपने 125वें वर्ष के पायदान पर सूर्य के समान देदीप्यमान हो रही है। हम सब जानते हैं कि हमारे अस्तित्व का मूल आधार हमारी प्राचीन विरासत ही होती है। अब चाहे हम अपने परिवार, वंश, समाज, परम्परा, गुरु, तीर्थ या अन्य कोई भी विषय को दृष्टिगत करें, सभी पृष्ठभूमि में हमारी प्राचीनता ही मूल आधार के रूप में हमें नजर आती है। ठीक इसी प्रकार वर्तमान में यदि जैन समाज, धर्म या संस्कृति की बात करें, तो इनके पीछे भी हमारी प्राचीन विरासत ही हमारी ढाल बनकर हमारा संरक्षण करती है और हमें आगे बढ़ाती है। अब इस बात का चिंतन करें कि यदि हमारे पास हमारी प्राचीन धरोहर, परम्परा, मान्यताएं अथवा वंशावली आदि न होवें, तो क्या हम अपने अस्तित्व को प्राचीन सिद्ध कर पायेंगे? नहीं, ऐसा हम कदाचित नहीं कर पायेंगे। तो इसके लिए हमें अपनी प्राचीनता को बचाए रखना और भविष्य के लिए वर्तमान को बचाये रखना परम आवश्यक होता है। अब यदि हमनें आज अपनी प्राचीनता को सहेज कर रखा है, तो इसके पीछे अपने पूर्वजों के बड़े योगदान, समर्पण, बलिदान से सब कुछ संभव हुआ है, जिसके कारण आज हमें सर उठाकर, सीना तानकर, गर्व से जैनत्व के प्रति गौरवान्वित होने का अवसर प्राप्त हुआ है। अब वो पूर्वज कौन हैं, जिन्होंने ये सब कार्य किये हैं, इस पर यदि हम वर्तमान परिवेश में विचार करें, तो आज हम सबके लिए ''भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी'' एक लौह स्तंभ बनकर विगत 125 वर्षों से खड़ी है। जिसके अहर्निश प्रयासों से, कार्यकलापों से आज हम सब अपने तीर्थक्षेत्रों के प्रति एक दायित्व निभाते हुए संरक्षण, संवर्धन और विकास का कार्य कर पा रहे हैं।

आज भी जिन तीर्थक्षेत्र पर विवाद की स्थितियाँ हैं, उन सबके संरक्षण के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी सर्वप्रथम आकर देशव्यापी समर्पण के साथ कार्य करती है। सम्मेदशिखर जी का विवाद हो, गिरनार का हो, शिरपुर का हो अथवा अन्य कोई भी विवादों के घेरे में हमारे तीर्थ घिरे हों, तो उनके समक्ष तीर्थक्षेत्र कमेटी हमेशा से एक ऐसा बांध बनकर खड़ी रहती है कि जिसके अस्तित्व को कोई पराजित नहीं कर पाता है। ये ठीक उसी प्रकार है, जैसे भीषण आंधी और तूफान में एक नाव के लिए नाविक और पतवार उसको अडिग बनाये रखने में सफल होते हैं। आज भी अनेक ऐसी स्थितियां हैं, जब न्याय से नहीं अपितु साम-दाम-दण्ड-भेद से हमें अथवा हमारे तीर्थों को पीछे करने के प्रयास किये जाते हैं, लेकिन तीर्थक्षेत्र कमेटी हर संभव अपने दायित्वों को निभाकर किसी के गलत मंसूबों को कामयाब नहीं होने देती है।

ऐसी तीर्थक्षेत्र कमेटी जहाँ तीर्थों के संरक्षण में अपना अहर्निश योगदान दे रही है, वहीं इस तीर्थक्षेत्र कमेटी के द्वारा सभी प्राचीन तीर्थक्षेत्रों के लिए योग्य अनुदान भी दिये जा रहे हैं, जिससे कि हमारे तीर्थक्षेत्रों पर होने वाले विकासीय कार्यों में पुष्प ना हो तो पत्ती के समान ही तीर्थक्षेत्र कमेटी हमेशा विकास को प्रोत्साहित करती रहे। वर्तमान में जहाँ केन्द्रीय कमेटी का कार्यालय मुम्बई में है, वहीं यह तीर्थक्षेत्र कमेटी सम्पूर्ण देश में 9 अंचलीय समितियों के माध्यम से अपने कार्य का व्यापक दायरा बनाती है। मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश-उत्तराखंड, महाराष्ट्र, गुजरात, पूर्वांचल, तमिलनाडु, कर्नाटक, दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-जम्बू, ये 9 प्रादेशिक स्तर पर वर्तमान में तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा प्रत्येक प्रदेश को 20-20 लाख रुपये की राशि अनुदान स्वरूप देकर वहाँ के तीर्थक्षेत्रों के रख-रखाव, संरक्षण, विकास अथवा अन्य व्यवस्थाओं हेतु अपना कदम आगे बढ़ाया है। हाल ही में दिनाँक 22 जून 2025 को तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी परिषद की एक बैठक सिद्धान्त तीर्थ, शिकोहपुर (गुड़गाँव) में सम्पन्न हुई, जिसमें उक्त निर्णय लेकर महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, पूर्वांचल, उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु जैसे प्रदेशों के विभिन्न तीर्थों पर विकासकार्य किये जाने को मूर्तरूप दिया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन-गाजियाबाद की अध्यक्षता में सम्पन्न इस मीटिंग में वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.-आगरा, श्री संजय पापड़ीवाल-औरंगाबाद, महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी-नागपुर, कोषाध्यक्ष श्री अशोक जैन दोशी-मुम्बई, मंत्री श्री हसमुख जैन गांधी-इंदौर, मंत्री डॉ. जीवन प्रकाश जैन-हस्तिनापुर तथा प्रान्तीय पदाधिकारियों में उत्तरप्रदेश-उत्तराखंड अध्यक्ष श्री जवाहरलाल जैन-सिकन्द्राबाद, मध्यप्रदेश अध्यक्ष श्री डी.के. जैन-इंदौर, महामंत्री श्री राजकुमार घाटे-इंदौर, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री प्रद्युम्न कुमार जैन-दिल्ली, तमिलनाडु अध्यक्ष श्री संजय जैन ठोलिया व साथ में श्री दिनेश सेठी तथा कमेटी के मुख्य प्रबंधक श्री उमानाथ दुबे आदि उपस्थित हुए। इस प्रकार भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी अपने विकासीय एवं तीर्थ संरक्षण के एजेंडा के साथ आगामी 22 अक्टूबर 2026 से लेकर 21 अक्टूबर 2027 तक 125 वें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर ''शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष'' भी मना रही है।

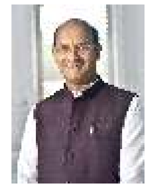

उक्त समारोह श्री जम्बू स्वामी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, चौरासी (मथुरा) उ.प्र. से शुभारंभ किया जायेगा। आशा है तीर्थक्षेत्र कमेटी अपने सवासौ वर्षीय इस कार्यकाल का इतिहास समाज के समक्ष अनेक उपलब्धियों के साथ रखते हुए पुन: आगामी शतक के लिए पूर्ण जोश-उत्साह एवं सकारात्मक ऊर्जा लिये कदम दर कदम उन्नति के साथ जैन धर्म, समाज और संस्कृति के प्रति सदैव समर्पित रहेगी। शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष के आयोजन हेतु समाज के बहुत ही अनुभवी एवं वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री जवाहरलाल जी जैन-सिकन्द्राबाद को इस कमेटी का चेयरमैन बनाया गया है, हम सबका दायित्व है कि हम तन-मन-धन से उनका सहयोग कर आयोजन को सफल बनाने में अपनी महती भूमिका निभाएं।

प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज एवं उनकी परम्परा

– डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

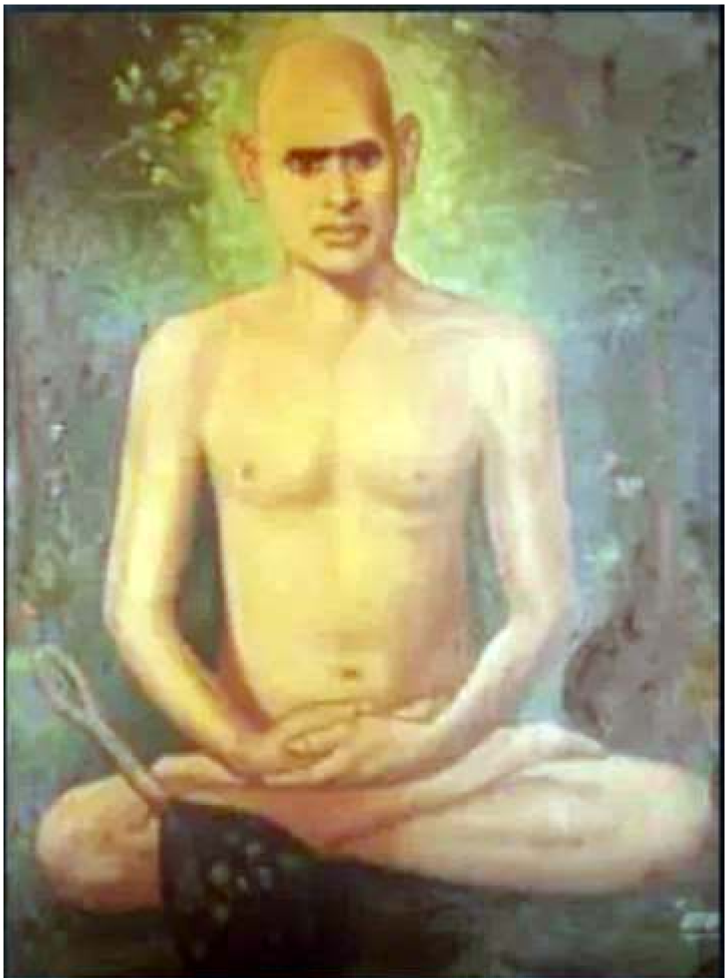

परम पूज्य प्रशममूर्ति, योगीसम्राट, तपोनिधि, दिगम्बर,जैनाचार्य
श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज (छाणी)

"इतिहास हमारे जीवन, संस्कृति और दर्शन का मुख्य आधार है। इतिहास मिटाया जाता है तो समूचे राष्ट्र या समाज का अस्तित्व खतरे में आ जाता है।"

उक्त प्रकट तथ्य के बावजूद हमारी जैन समाज में आज भी इतिहास के लेखन एवं संरक्षण के प्रति घोर उपेक्षा का भाव है। न हमने पहले इतिहास को संजोया और न आज कर रहे हैं।

हमारे प्रथम २१ तीर्थंकरों के पौराणिक विवरण तो उपलब्ध हैं किन्तु ऐतिहासिक संदर्भ नहीं। भ. नेमिनाथ, भ. पार्श्वनाथ एवं भ. महावीर का इतिहास भी असंदिग्ध नहीं है।

अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर की उपस्थिति एवं अस्तित्व को प्रमाणित करने वाले कोई ऐतिहासिक, शिलालेखीय साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं। उनकी जीवन की अवधि के बारें में भी निम्न २ मत है।

१ चैत्र शुक्ल त्रयोदशी ५९९ ई.पू. से कार्तिक अमावस्या ५२७ ई.पू. तक।

२ दूसरा मत ६०–७० वर्ष बाद में जन्म मानकर ४६६ ई. पू. के लगभग निर्वाण[१]

यद्यपि आज प्रथम मत प्राय: स्वीकार्य है किन्तु बौद्ध साहित्य के आधार पर डॉ. सागरमल जैन ने द्वितीय मत का पोषण किया।

पट्टावलियों एवं अन्य अनेक साक्ष्यों के बावजूद आ. गुणधर, आ. धरसेन, आ. कुन्दकुन्द, आ. समन्तभद्र, आ. यतिवृषभ, आ. सर्वनन्दि, आ. पूज्यपाद आदि के काल के बारे में बड़ी अनिश्चितता उत्पन्न कर दी गई है। इस कारण इन आचार्यों द्वारा प्रणीत ग्रंथों में निहित सामग्री का यथेष्ट मूल्यांकन नहीं हो पा रहा है जैसे :–

१. George Ifrah अपनी पुस्तक Universal Theory of Numbers[2] में लोयविभाग के अन्त: साक्ष्य[3] के आधार पर उसका काल ४५८ ई. निर्धारित कर दिये जाने से स्थानमान सहित शून्य के आविष्कार का श्रेय आ. सर्वनन्दि को देते है किन्तु हमारे अपने विद्वान इस विषय में उदासीन हैं। वे आज भी आर्यभट (४९९ई.) का गाना गा रहे हैं।

२. आ. यतिवृषभ कृत तिलोयपण्णत्ती मूलत: २सरी श.ई. की कृति है। इसका आधार परम्परा से प्राप्त दृष्टिवाद का ज्ञान बताया गया है।[४] बाद में बहुत कुछ क्षेपक जोड़ा गया है फलत: कई विद्वान ४७३–६०९ ई. का बताते हैं[५] किन्तु मूल रचना तो २सरी श.ई. की ही है।

बीसवीं शताब्दी में मुनि परम्परा के पुनरुद्धार के बाद भी यहीं स्थिति गतिमान है। बींसवी सदी के पूर्व मुनि परम्परा का लोप तो नहीं हुआ था। दक्षिण भारत में पूज्य मुनिगण विद्यमान थे। श्री नीरज जैन ने मुझे बताया कि बीसवीं सदी के प्रारम्भ में एक बार मथुरा चौरासी में २ मुनि (एक शायद श्री अनन्तकीर्ति जी) पधारे थे। १–२ दिन रुके एवं अचानक बिहार कर गये। तथापि बीसवी सदी में मुनि परम्परा के विकास में प्रमुखता से निम्न ३ आचार्यों का विशेष योगदान रहा।

१. चारित्र चकवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी 'दक्षिण'

२. मुनिकुञ्जर आचार्य श्री आदिसागर जी 'अंकलीकर'

३. प्रशममूर्ति आचार्य श्री शांतिसागर जी 'छाणी'

वर्तमान में उपलब्ध समस्त पिच्छिधारी संत इन्हीं तीन परम्पराओं से सम्बद्ध हैं। पूज्य गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माता जी छाणी परम्परा के पंचम पट्टाचार्य विद्याभूषण सन्मति सागर जी से दीक्षित होकर इस परम्परा से सम्बद्ध है। फलत: मैं आज इसी परम्परा की चर्चा करूँगा।

जो दिखता है वह बिकता है। हमारे व्यापारी भाई इस बात को अच्छे से समझते हैं इसी कारण वे अपनी दुकान की सभी अच्छी चीजें जमाकर बाहर रखते हैं, जिससे दिखें। आचार्य शांतिसागर छाणी महाराज की परम्परा के संतों ने आत्म साधना पर तो ध्यान दिया किन्तु अपनी गुरु परम्परा की उपलब्धियाँ को प्रचारित करने का लक्ष्य नहीं रखा फलत: विगत ४०–५० वर्षों में उनके अवदान को लगभग विस्मृत कर दिया गया।

आत्म कल्याण के महान लक्ष्य को केन्द्र में रखकर दीक्षा लेने

वाले दिगम्बर जैन संत सांसारिक प्रपंचों से दूर रहते हैं। इस स्थिति में समकालीन एवं भावी पीढ़ी को स्वयं का परिचय देने हेतु कुछ लिखने की संभावना कम रहती है। चंचल चित्त की प्रवृत्तियों को एक स्थान पर केन्द्रित करने अथवा शिष्य समुदाय को आध्यात्मिक या कर्म सिद्धान्त को स्पष्ट करने हेतु क्रमश: द्रव्यानुयोग एवं चरणानुयोग के ग्रंथों की टीकाओं/व्याख्याओं अथवा उनके सरलीकरण हेतु स्वतंत्र ग्रंथों के मुनियों द्वारा सृजन के अनेक प्रमाण हैं। परम्परा के संरक्षण एवं श्रावकों में श्रद्धान को प्रबल करने हेतु अथवा आगमोक्त चर्या एवं जीवनशैली के प्रचार–प्रसार हेतु क्रमश: प्रथमानुयोग एवं चरणानुयोग के ग्रन्थ भी विपुल परिणाम में लिखे गये जो आज भी जैन शास्त्र भंडारों में संरक्षित हैं किन्तु स्वयं का परिचय देने वाले ग्रन्थ नहीं लिखे गये। हमारी महान मुनि परम्परा के बारे में जो कुछ भी आज उपलब्ध है वह ग्रन्थों की प्रशस्तियों में, पट्टावलियों तथा शिष्यों द्वारा गुरु परम्परा के गौरव में किये गये लेखन से ही प्राप्त होता है।

आचार्य श्री शांतिसागरजी 'छाणी' महाराज ने अपना जीवन वृत्त न तो स्वयं लिखा न लिखवाया।

सविनय नमोस्तु पुस्तक में पं. नीरज जी जैन ने लिखा है कि सौभाग्य से 'छाणी' महाराज के एक सुधी शिष्य ब्रह्मचारी भगवानसागरजी द्वारा ६५ वर्ष पूर्व लिखा हुआ आचार्य श्री का अधूरा जीवन चरित्र किसी शास्त्र भण्डार से ढूंढ निकाला गया। यह जीवनी एक छोटी पुस्तिका के रूप में गिरिडीह के ब्र. आत्मानन्द जी ने सन् १९२७ में लखनऊ के शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस से प्रकाशित की थी।[६]

गत शताब्दी के मूर्घन्य जैन विद्वान एवं प्रसिद्ध लेखक बाबू कामताप्रसाद जी जैन, जो आचार्य शांतिसागरजी के समकालीन थे, ने १९२७ में स्पष्ट लिखा :–

'मुझे यह कहने में भी कुछ संकोच नहीं कि शांतिसागरजी महाराज इस काल में एक साधुरत्न है। उनसे धर्म की प्रभावना है और वे हमारे हित चिंतक है। उनकी भक्ति और विनय करके हम पुण्य कर उपार्जन इस पंचमकाल में भी कर सकते हैं। जिन दिगम्बर मुनिराजों की कथाएं हम पुरातन ग्रंथों में ही पढ़ते थे, उनके (दिगम्बर मुनियों के) प्रत्यक्ष दर्शन करने का सुअवसर आज प्राप्त हो गया है। यह हमारा अहो भाग्य है।'[७] आइये ऐसे महान संत की जीवन यात्रा के बारे में भी कुछ जान ले।

जीवनवृत्त :

प्रशममूर्ति, आचार्य १०८ श्री शांतिसागरजी 'छाणी' महाराज का जन्म राजस्थान प्रान्त के उदयपुर नगर के समीप 'छाणी' ग्राम में हुआ था, फलस्वरूप आप छाणी वाले महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए। आपका जन्म कार्तिक वदी ग्यारस वि. सं. १९४५ तदनुसार ई. सन् १८८८ में हूमड़ जातीय पिता श्री भागचन्दजी एवं माता श्रीमती माणिक बाई के यहाँ हुआ। आपका जन्म नाम केवलदास था। बाल्यावस्था से ही आपमें अध्यात्म के बीज अंकुरित होने लगे थे। फलस्वरूप बाल ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार करने के उपरांत आपने वि.सं. १९७९ अर्थात् सन् १९२२ को गढ़ी (जिला–बाँसवाड़ा) राजस्थान में क्षुल्लक दीक्षा एवं एक वर्ष पश्चात् भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी वि.सं. १९८० तदनुसार सन् १९२३ को राजस्थान प्रांत के सागवाड़ा नगर में दिगम्बरत्व पद स्वीकार कर श्रमण परम्परा के पायदान पर अपने कदम बढ़ाये और पद विहार कर भव्य जीवों को धर्मोपदेश देते हुए सम्पूर्ण भारत विशेषत: उत्तर भारत को अपनी धर्म प्रभावना का क्षेत्र बनाया।

समाजसुधारक :

आप एक सच्चे समाज सुधारक थे, फलत: आपने समाज में प्रचलित तात्कालिक कुरीतियों को दूर करने का साहसिक प्रयत्न किया। मृत्यु उपरांत छाती पीटने की प्रथा, दहेज प्रथा, बलि प्रथा, कन्या विक्रय प्रथा, विधवा स्त्री को काले कपड़े पहनाने की प्रथा आदि का विरोध किया। आपके अहिंसात्मक एवं धर्ममय प्रवचनों के माध्यम से इन प्रथाओं पर बंदिश लगी और मानवीय जीवन अहिंसा के पायदानों पर गतिशील होने लगा। अनेकों ने अहिंसा धर्म अंगीकार कर निज जीवन में संस्कारों का पौधारोपण कर सुख–शांति–समृद्धि की ओर अपने को प्रतिष्ठित किया। आपके गिरिडीह (झारखण्ड) प्रवास पर संस्कारित प्रवचनों से प्रभावित होकर एवं आगमोक्त चर्या को देखकर स्थानीस समाज ने वि.सं. १९८३ (सन् १९२६) में आपको आचार्य पद पदासीन कर दिया गया।

आचार्य शांतिसागरजी 'छाणी' की जीवन गाथा वास्तव में आस्था, निष्ठा, साहस और दृढ़ संकल्पों की गाथा है। उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं को समझने के लिये हमें उनके जीवन की हर घटना को तत्कालीन समय और समाज के परिप्रेक्ष्य में ही समझना होगा।

प्राय: 'छाणी' वाले महाराज के व्यक्तित्व को उनके समकालीन चारित्र–चक्रवर्ती पूज्य आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज (दक्षिण) के साथ तुलना करके देखा जाता है। इस प्रकार की दृष्टि से न तो महाराज को समझा जा सकता है और न ही किसी के व्यक्तित्व का सही मूल्यांकन करना सम्भव हो सकता है। इसलिये दोनों महात्माओं का, एक–दूसरे से निरपेक्ष और निष्पक्ष मूल्यांकन करके ही उन्हें समझना चाहिए, तभी उनके वंदनीय–व्यक्तित्व का सही दर्शन हो सकेगा। इसके बावजूद काल की दृष्टि से चारित्रचक्रवती आचार्य श्री शांतिसागर जी (दक्षिण) के समकालीन प्रशममूर्ति, आचार्य श्री शांतिसागरजी 'छाणी' (उत्तर) थे। चारित्रचक्रवर्ती

आचार्य का नाम	जन्म ईस्वी सन्	क्षुल्लक दीक्षा	मुनि दीक्षा	आचार्य पद प्राप्ति	समाधि प्राप्ति
मुनिकुञ्जर आचार्य आदिसागर (अंकलीकर)	1866	–	1913	–	1944
आचार्य शांतिसागरजी (दक्षिण)	1872	1915	1920	1924	1955
आचार्य शांतिसागर 'छाणी' (उत्तर)	1888	1922	1923	1926	1944

आचार्य श्री शांतिसागरजी यद्यपि आयु में आचार्य शांतिसागरजी 'छाणी' से १५–१६ वर्ष बड़े थे, परन्तु दोनों के दीक्षा संस्कारों में अधिक अन्तर नहीं था। एक दृष्टि में यदि हम जानना चाहें तो इस युग की तीनों विभूतियों का बिन्दु वार विवरण इस प्रकार है। आचार्य का नामजन्म ईस्वी सन्क्षुल्लक दीक्षामुनि दीक्षाआचार्य पद प्राप्तिसमाधि प्राप्तिमुनिकुञ्जर आचार्य आदिसागर (अंकलीकर) १८६६–१९१३–१९४४आचार्य शांतिसागरजी (दक्षिण)१८७२१९१५१९२०१९२४१९५५आचार्य शांतिसागर 'छाणी' (उत्तर)१८८८१९२२१९२३१९२६१९४४इससे स्पष्ट है कि छाणी महाराज को मुनि/आचार्य अवस्था में धर्म प्रचार हेतु केवल २२ वर्ष का समय मिला। इतना विशेष है कि आचार्य शांतिसागरजी (दक्षिण) ने क्षुल्लक दीक्षा के थोड़े दिन उपरान्त गिरनार पर्वत पर वस्त्र–खण्ड त्याग कर ऐलक पद अंगीकार कर लिया और बाद में कई वर्षों तक उसी वेश में वे विहार करते रहे। यह भी ध्यान में रहना चाहिए कि यद्यपि उन्हें 'चारित्र–चक्रवर्ती' की उपाधि से कई वर्षों बाद विभूषित किया गया था, पर कालान्तर में ही 'चारित्र–चक्रवर्ती' सम्बोधन उनके लिए रूढ़ हो गया और उस नाम से ही उनकी पहचान होने लगी।

इस प्रकार साधना के क्षेत्र में चारित्र–चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी (दक्षिण), आचार्य श्री शांतिसागरजी 'छाणी' से हर रूप में वरिष्ठ थे। 'छाणी' वाले महाराज ने उनकी इस वरिष्ठता का सदा उदारतापूर्वक सम्मान दिया। दोनों आचार्यों में एक–दूसरे के लिए संत–सुलभ वात्सल्य और आदर का भाव था। अंकलीकर महाराज वय में इन दोनों आचार्यों में बड़े थे किन्तु आचार्य के रूप में उनके अवदानों का विवरण हमें नहीं मिला।

'छाणी' वाले महाराज उत्तर भारत में विहार करने वाले प्रथम दिगम्बर जैन आचार्य रहे, परन्तु इसमें इतना ध्यान रखना होगा कि उनके मुनि दीक्षा लेने के सात–आठ वर्ष पूर्व, सन् १९१४ या १५ में दक्षिण के एक और मुनि श्री अनन्तकीर्ति जी 'निल्लीकर' मथुरा, आगरा आदि नगरों में रुकते हुए मुरैना पहुँचे थे।

वास्तव में तो 'छाणी' वाले महाराज ही ऐसे प्रथम मुनिराज थे, जिन्होंने उत्तर भारत के नगरों की दूर–दूर तक पद यात्रा करके दिगम्बर साधु के विहार का मार्ग प्रशस्त किया। उनके जीवन–वृत्त से ज्ञात होता है कि सन् १९२७ में, जब चारित्र–चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी का संघ सम्मेदाचल की वन्दना का ध्येय बनाकर कुम्भोज से नागपुर की ओर प्रस्थान कर रहा था, तब जनवरी १९२७ तक पूज्य मुनि श्री शांतिसागरजी 'छाणी' महाराज राजस्थान के अनेक स्थानों में भ्रमण करते हुए और इन्दौर तथा ललितपुर में अत्यन्त प्रभावक चातुर्मास व्यतीत करते हुए, पूरे मालवा, बुन्देलखण्ड और उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में विहार कर चुके थे। इसी बीच इन्दौर के पास मालवांचल के हाटपीपल्या में उन्होंने अपने प्रथम शिष्य के रूप में ऐलक सूर्यसागरजी को मुनिदीक्षा भी प्रदान की।

मुनि श्री शांतिसागरजी 'छाणी' महाराज के सन् १९२६ ई. में अपने संघ सहित कानपुर, लखनऊ, गोरखपुर, अयोध्या और बनारस आदि उत्तर प्रदेश के प्रमुख नगरों में विहार करते हुए शाश्वत सिद्धक्षेत्र भी शिखरजी की यात्रा के लिए विहार किया। पिछली अनेक शताब्दियों के ज्ञात इतिहास में यह पहली घटना थी, जब कोई दिगम्बर मुनि दूर से भ्रमण करते हुए, अपने संघ के साथ पर्वतराज की वन्दना के निमित्त से वहाँ तक पहुँच रहे थे। ब्र. जी ने 'छाणी' वाले महाराज की इस अभूतपूर्व यात्रा का अपनी पुस्तक में सरस वर्णन किया है। जो इस प्रकार है–

'मुनिजी के आगमन के समाचार सुनकर श्री शिखरजी बीसपंथी कोठी के मुनीम और हजारीबाग के जैनी शिखरजी से हाथी लेकर मुनि श्री की अगवानी के लिए उनके पास आये। जब मुनिश्री ने पूछा कि–'हाथी क्यों लाये हो?' तब कहने लगे कि–प्रभावना के निमित्त से खुशी में लाये हैं, क्योंकि आज तक, कोई मुनि महाराज, सौ–डेढ़ सौ वर्षों के बीच में अभी तक यहाँ नहीं आये हैं। इसीलिए धर्म–प्रभावना बढ़ाने के लिए हम श्रावकों का जो कर्तव्य था, सो वहीं हमने किया है।'

इसके एक–डेढ़ वर्ष बाद चारित्र–चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी अपने विशाल संघ सहित दक्षिण से श्री सम्मदेशिखरजी की वन्दना हेतु पधारे।

'छाणी' महाराज ने ज्येष्ठ बदी दशमी वि.सं. २००१ तदनुसार १७ मई १९४४ को राजस्थान प्रांत के सागवाड़ा नगर में समाधिपूर्वक मरण कर इस नश्वर काया को त्याग दिया। आपके पश्चात् आपके आज्ञानुवर्ती शिष्य पूज्य आचार्य श्री १०८ सूर्यसागरजी महाराज ने आचार्य श्री शांतिसागरजी (छाणी) महाराज की परम्परा को गतिशील रखा। इसी महान परम्परा के चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमतिसागरजी, पंचम पट्टाचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागरजी, षष्ठ पट्टाचार्य राष्ट्रसंत आचार्य श्री ज्ञानसागरजी हुए। आचार्य की पट्ट परम्परा का चार्ट परिशिष्ट में दृष्टव्य है। पूज्य आचार्य श्री १०८ शांतिसागरजी महाराज 'छाणी' ने अपने श्रमण काल में निम्नवत् २२ वर्षायोग किये थे–

(अ) क्षुल्लक अवस्था में –
(१) वि.सं. १९७९ (सन् १९२२), परतापुर (राज.)
(२) वि.सं. १९८० (सन् १९२३), सागवाड़ा (राज.)

(ब) मुनि अवस्था में –
(३) वि.सं. १९८१ (सन् १९२४), इन्दौर
(४) वि.सं. १९८२ (सन् १९२५), ललितपुर

(स) आचार्य अवस्था में –
(५) वि.सं. १९८३ (सन् १९२६), गिरिडीह
(६) वि.सं. १९८४ (सन् १९२७), परतापुर
(७) वि.सं. १९८५ (सन् १९२८), ऋषभदेव
(८) वि.सं. १९८६ (सन् १९२९), सागवाड़ा
(९) वि.सं. १९८७ (सन् १९३०), इन्दौर
(१०) वि.सं. १९८८ (सन् १९३१), ईडर
(११) वि.सं. १९८९ (सन् १९३२), नसीराबाद
(१२) वि.सं. १९९० (सन् १९३३), ब्यावर
(१३) वि.सं. १९९१ (सन् १९३४), सागवाड़ा
(१४) वि.सं. १९९२ (सन् १९३५), उदयपुर
(१५) वि.सं. १९९३ (सन् १९३६), ईडर
(१६) वि.सं. १९९४ (सन् १९३७), गलियाकोट
(१७) वि.सं. १९९५ (सन् १९३८), पारसोला (राज.)
(१८) वि.सं. १९९६ (सन् १९३९), भींडर

(१९) वि.सं.१९९७ (सन् १९४०), तालोद

(२०) वि.सं.१९९८ (सन् १९४१), ऋषभदेव (राज.)

(२१) वि.सं. १९९९ (सन् १९४२), ऋषभदेव (राज.)

(२२) वि.सं. २००० (सन् १९४३), सलुम्बर (राज.)

पूज्य आचार्य १०८ श्री शांतिसागरजी (छाणी) महाराज का जितना विशाल एवं अगाध व्यक्तित्व था उनका कृतित्व उससे भी अधिक विशाल था। आपने मुनि दीक्षा, ऐलक–क्षुल्लक एवं ब्रह्मचारी दीक्षायें देकर अनेक जीवों पर महान उपकार किया है। आपने अपने श्रमणकाल में मुनि ज्ञानसागरजी (धार वाले), मुनि मल्लिसागरजी, मुनि सूर्यसागरजी, मुनि आदिसागरजी, मुनि नेमिसागरजी, मुनि वीरसागरजी एवं क्षुल्लक धर्मसागरजी आदि को दीक्षा देकर श्रमण संस्कृति को समृद्ध किया है। वर्तमान में भी पट्टाचार्य ज्ञेयसागरजी, आचार्य अतिवीरसागरजी, आचार्य विवेकसागरजी, आचार्य ज्ञानभूषणजी, आचार्य निर्भयसागरजी (उमता वाले), आचार्य विनीतसागरजी, पूर्वाचार्य श्री त्रिलोकभूषणजी, गणिनी स्वस्तिभूषण माताजी, आर्यिका सृष्टिभूषणजी, आर्यिका दृष्टिभूषणजी, क्षुल्लक समर्पणसागरजी, क्षुल्लिका चन्द्रमतिजी, क्षुल्लिका ज्ञाननन्दिनी जी एवं अन्य अनेक मुनि, आर्यिका आदि इसी परम्परा के है। इस परम्परा के अनेक संतों ने संस्कृति के विकास में दीक्षायें देकर, संयम के व्रत देकर महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। कई ने मन्दिर निर्माण, संस्था निर्माण या साहित्य सृजन कर समाज पर उपकार किया है किन्तु समय के साथ यह सब विस्मृत होता जा रहा है। जरूरत इस बात की है कि तथ्यों का संकलन कर परम्परा का गौरव सुरक्षित किया जाये। परम्परा के प्रत्येक दीक्षित साधु का विवरण संकलित किया जाये। यह संभव है कि कुछ साधुओं ने कोई दीक्षा आदि न दी हो कोई संस्था या मंदिर का निर्माण न किया हो तथापि परम्परा के गौरव एवं इतिहास हेतु सभी के अधिकाधिक विवरण संकलित करना चाहिए। गत शताब्दी में इतिहास के संकलन के प्रति हमने जो उदासीनता बरती है उसका प्रायश्चित इसी रीति से संभव है। यदि हम अपना इतिहास सुरक्षित नहीं रखेंगे तो हम भी शीघ्र ही विस्मृत कर दिये जायेंगे। इतिहास की रक्षा जरूरी है।

गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी इसी परम्परा की उज्जवल नक्षत्र है। आपने राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में भगवान मुनिसुव्रतनाथ के तीर्थ स्वस्तिधाम का निर्माण कराकर क्षेत्र का जहाजपुर नाम सार्थक कर दिया है। हमें विश्वास है कि यहाँ निर्माणाधीन सरस्वती मन्दिर छाणी परम्परा ही नहीं दिगम्बर संस्कृति के इतिहास का अनुपम केन्द्र बनेगा।

सन्दर्भ स्थल :—

१. J.P. Jain History of Ancient India from Jaina Sources, IInd Edition, New Delhi, IInd Edition, P. 16-31

२. George Ifrah, Universal Theory of Numbers, 2000, P.-419

३. लोयविभाग, आ. सर्वनन्दि, संस्कृत—आ. सिंहसूरि, सोलापुर, द्वितीय संस्करण, २००१, प्रशस्ति पृ. २२५ तथा शून्य का प्रयोग ४/५६, पृ. ७९

४. तिलोयपण्णत्ती, आ. यतिवृषभ, कोटा, संस्करण, १९८४—८८ १/१४८

५. लक्ष्मीचन्द्र जैन, तिलोयपण्णत्ती का गणित, अन्तर्गत—जम्बुद्दीवपण्णत्तिसंगहो, सोलापुर, १९५८

६. नीरज जैन, सविनय नमोस्तु, मेरठ, पृ.१०

७. वहीं,

उत्तरप्रदेश रिजोर गांव में खुदाई के दौरान जैन प्राचीन प्रतिमा प्राप्त हुई

उत्तरप्रदेश के एटा जिले में शिकोहाबाद रोड स्थित रिजोर गांव में पिछले शुक्रवार को प्राचीन किले के पास ओवरहेड टैंक के निर्माण के लिए खुदाई के दौरान जैन तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामी की प्राचीन प्रतिमा प्राप्त हुई। प्रथम दृष्टया ही ग्रामीणों ने इसे जैन धर्म से संबंधित मानकर जैन समाज के लोगों को जानकारी दी लेकिन, बाद में कुछ लोगों ने उसे बुद्ध प्रतिमा कहकर विवाद खड़ा किया। इसकी जांच के लिए रविवार को पुरातत्व विभाग की तीन सदस्यीय टीम रिजोर पहुंची। टीम ने मूर्ति को थाने में सुरक्षित रखवाया दिया। टीम का कहना है कि जांच के बाद तय हो सकेगा कि मूर्ति किसकी है? प्रशासन ने इसकी जानकारी भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण आगरा को दी।

समाज ने मूर्ति शीघ्र सौपने की मांग की

वर्द्धमानपुर शोध संस्थान के स्वप्निल जैन ने बताया कि सोशल मीडिया एवं प्रिंट मीडिया में प्रकाशित फोटो को देखा जाए तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह प्रतिमा जैन तीर्थंकर प्रतिमा दिखाई दे रही है क्योंकि, प्रदर्शित फोटो में कहीं ऐसे संकेत नहीं दिखाई दे रहे हैं। जिससे वह प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की न लगे। प्रतिमा विज्ञान कि सामान्य सी जानकारी रखने वाले व्यक्ति से भी पूछा जाए तो वह उसे भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा ही कहेगा। बुद्ध प्रतिमा के साथ वस्त्रों का अंकन किया जाता है जबकि, यह प्रतिमा साफ तौर पर दिगम्बर प्रतिमा ही दिखाई दे रही है। इसमें किसी भी तरह के वस्त्राभूषण का अंकन नहीं किया हुआ है। अतः स्थानीय जैन समाज के लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि शीघ्र मूर्ति दिगम्बर जैन समाज को सौंप दी जाएं ताकि भगवान की पूजा-अर्चना की जा सके।

जैन धर्म और गिरनार, जूनागढ़, गुजरात
(22वें जैन तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ जी की मोक्षस्थली)

- निर्मलकुमार पाटोदी, इंदौर

गिरनार पहाड़ियों में पांच शिखर हैं, जिनमें से पांचवी टोंक पर 22वें जैन तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ के चरण चिन्ह और चट्टान में 'उकेरी हुई उनकी प्राचीन मूर्ति शामिल है। भगवान नेमिनाथ, भगवान् श्रीकृष्ण के चचेरे भाई है।

प्रद्युम्न कुमार, जो भगवान श्री कृष्ण के पुत्र हैं, उन्होंने चौथी टोंक से मोक्ष प्राप्त किया; शंभु कुमार, जो भगवान श्री कृष्ण के पुत्र हैं, ने तीसरे टोंक से मोक्ष प्राप्त किया; श्री अनिरुद्ध कुमार, जो भगवान श्री कृष्ण के पोते हैं, ने दूसरे टोंक से मोक्ष प्राप्त किया। जूनागढ़ की राजकुमारी राजुलमती ने भी गिरनार पहाड़ियों की पहली चोटी पर स्थित राजुल गुफा से तप किया था। बहत्तर करोड़ सात सौ जैन मुनियों को भी जैन दर्शन के अनुसार पवित्र गिरनार पहाड़ पर से मोक्ष प्राप्त हुआ हैं। इस प्रमाण के आधार पर गिरनार पर्वत दिगंबर जैन धर्म का परंपरागत वंदना का और पूजनीय पूजा स्थल है। यह धर्मधरा भारत और विदेशों के लाखों जैन भक्तों द्वारा वंदनीय है।

>> चरण चिन्ह, पद्मासन में उकेरी हुई प्रतिमाएं प्राचीन काल से 5वीं चोटी और पहाड़ पर विभिन्न स्थानों पर जैन स्थापत्य के अनुसार है।

>> **गिरनार घटनाक्रम:**

➢ 2004 में तथाकथित लोगों ने उनके दत्तात्रेय की प्रतिमा अवैध तरीके से पुरातत्त्व संरक्षित 5वीं टोंक पर स्थापित की और 5वीं टोंक के स्वरूप को 15 अगस्त, 1947 की स्थिति के विपरीत स्वरूप में बदल दिया, जो पूजा स्थलों के अधिनियम 1991 का उल्लंघन है।

➢ उसके बाद, जैन अनुयायियों द्वारा एक मामला दर्ज किया गया और यह मामला माननीय गुजरात उच्च न्यायालय में विचाराधीन है। माननीय गुजरात उच्च न्यायालय ने 17.02.2005 को विशेष दीवानी आवेदन संख्या 6428/2004 के मामले में बंडीलाल दिगम्बर जैन कारखाना बनाम गुजरात राज्य के संदर्भ में जो आदेश दिया था, वह पैराग्राफ 9 में इस प्रकार कहा गया है:

"हमारे धर्मनिरपेक्ष देश में, यदि कोई व्यक्ति किसी भी धर्म से संबंधित है और वह एक पर्यटक या मंदिर या मस्जिद या किसी पूजा स्थल के अनुयायी के रूप में जाने की इच्छा रखता है, तो उसे सामान्य परिस्थितियों में रोकना नहीं चाहिए। यदि कोई नागरिक ऐसे स्थान का दौरा करने की इच्छा रखता है, चाहे वह अनुयायी के रूप में हो या पर्यटक के रूप में, तो यह राज्य की जिम्मेदारी होगी कि वह सुनिश्चित करें कि ऐसे यात्रियों की को सुरक्षित और सुविधाजनक वातावरण में दिया जाए।"

➢ माननीय उच्च न्यायालय ने आगे कहा कि-

"किसी भी स्थिति में यह आवश्यक होगा कि यह सुनिश्चित किया जाए कि आगंतुक आरामदायक और सुविधाजनक तरीके से यात्रा या प्रार्थना कर सकें, चाहे वह भगवान दत्तात्रेय के शिष्य के रूप में हो, भगवान नेमिनाथ के शिष्य के रूप में हो या एक पर्यटक के रूप में। यह भी आवश्यक होगा कि राज्य यह सुनिश्चित करें कि उस स्थान पर आने वाले जैन यात्रियों और पर्यटकों के लिए पर्याप्त सुरक्षा उपलब्ध कराई जाए और यदि कोई कानून और व्यवस्था की समस्या या कोई शिकायत हो तो उसे सही तरीके से निपटाया जाए।"

➢ और माननीय न्यायालय ने आगे निर्देशित किया है कि-

"यदि कोई शिकायत किसी भी आगंतुक द्वारा दर्ज की जाती है, चाहे वह भगवान नेमिनाथ के अनुयायी के रूप में या भगवान दत्तात्रय के अनुयायी के रूप में हो या कोई पर्यटक के रूप में हो, तो इसे तुरंत 12 घंटे के भीतर जिला पुलिस अधीक्षक को रिपोर्ट किया जाए और कानून के अनुसार आवश्यक कार्रवाई की जाए।"

➢ इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि अब पूरा गिरनार पहाड़ तथाकथितों द्वारा अवैध तरीके से कब्जा लिया गया है, जिसमें 5वीं टोंक भी शामिल है, जहाँ भगवान नेमिनाथ को मोक्ष प्राप्त हुआ।

➢ माननीय न्यायालय के 17.02.2005 के आदेश के वाबजूद भी सभी चोटियों पर जिनमें 5वीं टोंक भगवान नेमिनाथ की मोक्षस्थली, पहाड़ी पर अंबिका देवी भगवान् नेमिनाथ (श्रीकृष्ण के चचेरे भाई) कि यक्षिणी का मंदिर शामिल है और भगवान् श्रीकृष्ण के पुत्र और पौत्र की टोंके भी शामिल हैं जहां से उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया था। गुजरात सरकार और पुलिस प्रशासन जूनागढ़ कि मदद से इन तथाकथितों धर्म विरोधी अवांछित तत्वों द्वारा कब्जा कर लिया गया है और भगवान श्री कृष्ण के वंश की प्राचीन धरोहर के साथ छेड़ छाड़ करने की कोशिश की जा रही है।

➢ अवांछित तत्वों सहित समाज-विरोधी तत्वों ने जैनों की धार्मिक धरोहर के साथ गंभीर हस्तक्षेप कर रहे हैं। ऐसे तत्वों द्वारा जैन तीर्थयात्रियों पर शारीरिक हमलों की घटनाएं हुई हैं, जिसके कारण जैन यात्री अपने पूजा के अधिकार का स्वतंत्रता से और बिना रोक-टोक के पालन नहीं कर पा रहे हैं। अतीत में कई अन्य जैन तीर्थयात्रियों पर भी इन अवांछितों और समाज विरोधी तत्वों ने हमले किए हैं और एक अब बार तो जैन संत श्री प्रबलसागर जी पेट पर भी सन् 2013 में ने चाकू से प्राण घातक प्रहार किए थे।

➢ टोंक में उपस्थित अवांछित तत्वों द्वारा जैनियों यात्रियों को हमेशा दर्शन और पूजा-अर्चना के उच्च न्यायालय द्वारा प्रदत्त धार्मिक अधिकारों से वंचित रखा जाता है। इसलिए समाज के भक्त श्री सोहनलाल बज, कोपरगाव - महाराष्ट्र ने 30 सितम्बर 2023 को एक लिखित आवेदन माननीय उच्च न्यायालय गुजरात के आदेश दिनांक 17.2.2005 के अनुसार सुरक्षित और आश्वस्त धार्मिक परंपरा विधि के पालन के लिए उसकी प्रति लगाकर माननीय कलेक्टर/डीएम, एसपी, भवनाथ पुलिस स्टेशन को इस अनुरोध के साथ दी गई थी ताकि 01.10.2023 को पहुंच रहे यात्रियों को पर्वत और पांचवी टोंक पर सुरक्षित और आश्वस्त दर्शन आदि क्रियाएं करने में किसी भी प्रकार की परेशानी न हो सके।

➢ लेकिन जब तीर्थयात्री पांचवीं टोंक पर दर्शन करने के लिए अंदर जाने लगे तो वहां पर उपस्तिथ रहने वाले एक व्यक्ति ने डंडो और चिमटों को हवा में लहराते हुए, धमकाते और गालियां देकर तीर्थयात्रियों को आतंकित किया। किंतु यात्रियों ने बिना डरे दर्शन जरूर किये। लेकिन वहां सहजता से दर्शन पालन आदि सुलभ नहीं थे, सभी तीर्थयात्रियों ने आतंक के साये में सिर्फ़ दर्शन किये।

➢ इसके बाद पक्षपात करते हुए पुलिस प्रशासन ने सभी तीर्थयात्रियों को कई घंटो तक जबर्दस्ती रोककर रखा जो भारत जैसे देश के लोकतंत्र को शर्मसार करता है। तीर्थयात्रियों को सुलभ दर्शन पालन आज नहीं करने देना व नाजायज तरीके से रोककर रखना 17.02.2005 के उच्च न्यायालय के आदेश की अवमानना है तथा तीर्थयात्रियों के मौलिक धार्मिक अधिकारों का हनन है।

➢ तत्पश्चात कई बार जैन तीर्थयात्रियों के साथ मारपीठ-गालीगलौज की घटनाएं हुई है।

➢ 5वीं टोंक के अंदर प्रवेश करने वाले जैन तीर्थयात्रियों को रोकना पंडों का रोजमर्रा का काम है। जैन तीर्थयात्रियों को आसानी से पहचाना जा सकता है क्योंकि वे सभी 5 टोंकों पर नंगे पैर दर्शन और प्रार्थना के लिए जाते हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जैन वहां स्थापित पदचिह्न/प्रतिमा पर चावल चढ़ाते हैं। यहां तक कि जैनियों को भी पदचिह्न पर चावल चढ़ाने की अनुमति नहीं है। जैन तीर्थयात्रियों पर अनगिनत बार इन पंडो द्वारा हमला किया जा चुका है।

➢ कई बार ऍफ़ आई आर दर्ज हुई है लेकिन कभी भी उन पर कोई एक्शन नहीं लिया गया बल्कि तथाकथित पंडो द्वारा काउंटर ऍफ़ आई आर पर एक्शन लिया गया और जैन तीर्थयात्रियों को परेशान किया गया और किया जा रहा है। यह सब तानाशाही साशन और प्रसाशन कि निशानी है। लोकतंत्र में ऐसा कभी नहीं होता है। आप जैसे चैनल भी खरीद लिए जाते है तानाशाही सरकारों के द्वारा।

➢ विश्व जैन संगठन द्वारा 23 मार्च 2025 को दिल्ली से शुरू हुई एक नेमी गिरनार धर्म यात्रा 2 जुलाई 2025 को गिरनार 5वें टोंक (उर्ज्यंत) पर प्रार्थना और निर्वाण लड्डू अर्पित करने हेतु पहुंची।

➢ इस वर्ष 2 जुलाई को निर्वाण महोत्सव के मद्देनजर, 5वीं टोंक (ऊर्ज्यंत) पर भगवान नेमिनाथ निर्वाण महोत्सव के अवसर पर जैन तीर्थयात्रियों द्वारा निर्वाण लड्डू चढ़ाने के लिए गिरनार पहाड़ी पर माननीय गुजरात उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 17.02.2005 के अनुपालन में पुलिस बल व पर्याप्त सुरक्षा व्यस्था हेतु माननीय राष्ट्रपति महोदय, प्रधानमन्त्री महोदय और अन्य केंद्रीय सरकार और गुजरात सरकार के प्राधिकरण को जिला कलेक्टर को निर्देशित करने हेतु एक अनुरोध पत्र प्रस्तुत किया गया था। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि लड्डू चढ़ाना निर्वाण महोत्सव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

➢ यह जानकारी प्रकाश में आयी है कि 25.06.2025 को माननीय DM, जुनागढ़ द्वारा जैन तीर्थयात्रियों द्वारा 2 जुलाई को भगवान नेमिनाथ मोक्ष (निर्वाण) कल्याणक के अवसर पर प्रार्थना और निर्वाण लड्डू अर्पित करने के संबंध में एक बैठक बुलाई गई थी, जिसमें दत्तात्रय संस्थान और जैन प्रतिनिधियों के साथ जल्दी में बैठक की गई, जिससे जैन प्रतिनिधियों को बैठक में शामिल होने के लिए पर्याप्त समय नहीं दिया गया।

➢ जैनों को यह जानकारी अख़बार के द्वारा मिली है कि माननीय DM, जुनागढ़ ने 2 जुलाई को 5वें टोंक (उर्जयन्त) पर जैनों को प्रार्थना और निर्वाण लड्डू अर्पित करने से मना कर दिया है, जो एक तरफ़ा निर्णय है, जो उन लोगों के पक्ष में है जो लगातार जैन तीर्थयात्रियों पर शारीरिक और मानसिक हमले में शामिल रहते हैं और उनको पूजा अर्चना से वंचित रखते है।

➢ इसके बाद जूनागढ़ पुलिस प्रशासन द्वारा जैनों को पहाड़ पर लड्डू और द्रव्य सामग्री न चढ़ाने की चेतावनी देने के लिए कुछ पोस्टर भी जारी किए गए।

➢ यहां यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण हो जाता है कि जैन श्रद्धालु भगवान नेमिनाथ के निर्वाण के बाद से लगातार 5वीं टोंक उर्जयन्त पर निर्वाण लड्डू अर्पण कर रहे है। हाल ही में 2016 में, दत्तात्रय संस्थान के साथ पुलिस प्रशासन का पक्षपाती होने के कारण पुलिस प्रशासन ने जैनों को भगवान नेमिनाथ कि निर्वाण टोंक पर निर्वाण लड्डू अर्पण करने से रोक दिया है, जैनों को भगवान नेमिनाथ का नाम जपने और बोलने के लिए भी डराया जाता है जो एक लोकतांत्रिक देश में एक बड़ी चिंता का विषय है। जैनों को प्रार्थना करने की अनुमति भी नहीं दी जा रही है और उन पर हमला किया जा रहा है, जो मानव अधिकारों का भी उल्लंघन है।.

➢ गिरनार पहाड़ी गुजरात प्राचीन स्मारक और पुरातात्त्विक स्थलों और अवशेष अधिनियम 1965 के तहत एक संरक्षित स्मारक है। फिर भी, पूरे गिरनार पहाड़ी पर अवैध निर्माण किया जा रहा है और 15 अगस्त 1947 को जिस रूप में पांचवी टोंक का अस्तित्व था, उसके स्वरूप में भी गुजरात सरकार और जुनागढ़ पुलिस प्रशासन की सहायता से परिवर्तन किया गया है, जो पूजा स्थलों अधिनियम 1991 का घोर उल्लंघन है।

➢ गुजरात सरकार और पुलिस प्रशासन से उम्मीद की जाती है कि वह माननीय न्यायालय के 17.02.2005 के आदेश का पालन करें। हालांकि, माननीय उच्च न्यायालय के 17.02.2005 का आदेश लागू होने कि स्तिथि में गुजरात सरकार और पुलिस प्रशासन न तो अधिकृत हैं और न ही उन्हें किसी एक तरफा निर्णय लेने का अधिकार है लकिन गुजरात सरकार और पुलिस प्रशासन अपनी मनमानी कर लोकतंत्र कि धज्जियाँ उड़ा रही है।

➢ तथाकथित पंडो ने गुजरात सरकार और जूनागढ़ पुलिस प्रशासन की मदद से, पांचवी टोंक का नाम गुरु दत्तात्रेय रख दिया है जबकि वास्तव में पांचवी टोंक का नाम दत्तात्रि था जो भगवान् नेमीनाथ के पहले शिष्य थे। यह वास्तव में एक अजीब बात है कि चीजों को परिवर्तित करने में ये तथाकथित लोग बहुत ही आगे है।

➢ दुर्भाग्यवश, ऐसा आदेश पारित करना, माननीय उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 17.02.2025 का गंभीर उल्लंघन है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र/धर्मनिरपेक्ष देश पर सवाल है। यह गुजरात में लोकतंत्र की हत्या को दर्शाता है इसके अलावा भारत के संविधान की अवहेलना भी करता है। यह माननीय न्यायालय के आदेश दिनांक 17.02.2005 की अवमानना भी है। इसके अलावा यह मानव अधिकारों का उल्लंघन और धार्मिक अल्पसंख्यकों के अधिकारों का उल्लंघन भी करता है।

➢ उसके बाद, 2 जुलाई को, गिरनार पहाड़ी पर चलने वाली तारागाड़ी (रोपवे) को 3 जुलाई तक रोका गया और 4 जुलाई से फिर से शुरू किया गया, जो स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि 2 जुलाई को निर्वाण लाडू महोत्सव पर जिला प्रशासन, जूनागढ़ द्वारा जानबूझकर रोपवे को रोका गया था।

➢ जैन तीर्थयात्री जो पर्वत पर चढ़ रहे थे, पुलिस ने उनकी इस तरह से तलाशी ली जैसे वे लोग बम लेकर पर्वत पर जा रहे हो, जो कि दुनिया की सबसे बड़ी लोकतंत्र के लिए शर्मशार करने वाली बात है।

➢ आखिरकार, माननीय अदालत के आदेश दिनांक 17.02.2005 के लागू होने के बाद भी जिला प्रशासन ने जैन तीर्थयात्रियों को भगवान नेमिनाथ निर्वाण महोत्सव के अवसर पर निर्वाण लड्डू और द्रव्य सामग्री नहीं चढाने दी गई और गिरनार पर्वत पर जैनो के लिए भय का माहौल पैदा किया।

➢ जो भी जैन समाज के साथ गुजरात में हो रहा है वह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है यह माननीय उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 17.02.2025 का गंभीर उल्लंघन है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र/धर्मनिरपेक्ष देश पर सवाल है। यह गुजरात में लोकतंत्र की हत्या को दर्शाता है इसके अलावा भारत के संविधान की अवहेलना भी करता है। यह माननीय न्यायालय के आदेश दिनांक 17.02.2005 की अवमानना भी है। इसके अलावा यह मानव अधिकारों का उल्लंघन, धार्मिक अल्पसंख्यकों के अधिकारों का उल्लंघन और जैनो के मौलिक अधिकारों का भी उल्लंघन भी है।

चारित्र चक्रवर्ती परंपरा के पंचम पट्टाचार्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज का अविस्मरणीय योगदान

त्याग- तपस्या की प्रतिमूर्ति आचार्यश्री

- डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

भारतीय संस्कृति के उन्नयन में श्रमण संस्कृति का महनीय योगदान है। श्रमण संस्कृति के बिना भारतीय संस्कृति की कल्पना नहीं की जा सकती है । इस गौरवमयी श्रमण परंपरा में परम पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज का अहम योगदान है।

हम सभी का परम सौभाग्य है कि परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की महान परंपरा के पट्टाचार्य का दर्शन लाभ प्राप्त हो रहा है। आपका संघ त्याग तपस्या के लिए पूरे भारत में विख्यात है। संघ में आपका अनुशासन देखने योग्य है। आपकी वाणी से हजारों-हजार प्राणियों का कल्याण हो रहा है। आपका सभी के प्रति वात्सल्य भाव अनूठा है। कोई भी आपके चरणों में पहुँच जय, बस आपका होकर रह जाता है। आपकी सबसे बड़ी विशेषता है कि आप किसी की निंदा, आलोचना कभी नहीं करते, न ही किसी विवादास्पद चीजों में पड़ते हैं।

संयम, साधना और श्रद्धा की त्रिवेणी जब किसी संत के जीवन में सजीव रूप ले ले, तब वह व्यक्तित्व सामान्य नहीं रह जाता। वह बन जाता है — युगपुरुष, दिशानायक और लोकपथ-प्रदर्शक। दिगंबर जैन धर्म की चारित्र परंपरा में एक ऐसा ही तेजस्वी, करुणामय और प्रेरणास्पद व्यक्तित्व हैं — **वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज**, जो आज के युग में संयम और समर्पण के जीवंत प्रतीक हैं।

बचपन से वैरागी :

परम पूज्य आचार्य श्री 108 वर्धमानसागर जी महाराज का गृहस्थ अवस्था का नाम यशवंत कुमार था . श्री यशवंत कुमार का जन्म मध्य प्रदेश के खरगोन जिले के सनावद ग्राम में हुआ। श्रीमती मनोरमा देवी एवं पिता श्री कमलचंद्र जैन पंचोलिया के जीवन में इस पुत्र रत्न का आगमन दिनांक 18 सितम्बर सन 1950 को हुआ. आपने बी.ए. तक लौकिक शिक्षा ग्रहण की, सांसारिक कार्यों में आपका मन नहीं लगता था। प्रारंभ से ही उनमें वैराग्य की चिंगारी, ज्ञान की ललक और करुणा की संवेदना दिखने लगी थी। सांसारिक सुखों को असार जानकर उन्होंने ब्रह्मचर्य की ओर कदम बढ़ाया। युवावस्था में ही दीक्षा लेकर वे मुनि व्रतों में प्रवृत्त हुए और कठोर तप में रत हो गए।

"ना प्यास रही ना धूप रही,
जब तप में तन्मयता रूप रही।"

उनकी आरंभिक साधना में ही गुरुजनों ने उनके भीतर तपस्विता, संयमशक्ति और आगम-निष्ठा के बीज देख लिए थे। 18 वर्ष की अवस्था में आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज से आपने मुनि दीक्षा ग्रहण की, श्री शांतिवीर नगर, श्री महावीर जी में मुनि दीक्षा लेकर आपको मुनि श्री वर्धमानसागर नाम मिला. चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज की परम्परा के पंचम पट्टाधीश होने का आपको गौरव प्राप्त है।

आचार्य श्री वर्धमानसागर जी अत्यंत सरल स्वभावी होकर महान क्षमा मूर्ति शिखर पुरुष हैं, वर्तमान वातावरण में चल रही सभी विसंगताओं एवं विपरीतताओं से बहुत दूर हैं, उनकी निर्दोष आहार चर्या से लेकर सभी धार्मिक किर्याओं में हम आज भी चतुर्थ काल के मुनियों के दर्शन का दिग्दर्शन कर सकते हैं।

नमस्कार से चमत्कार :

चमत्कार को नमस्कार नहीं, बल्कि नमस्कार में छुपा हुआ होता है अगर भक्ति निष्काम हो तो | आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज जब मुनि अवस्था में थे तब दीक्षा के उपरांत महाराज की नेत्र ज्योति चले गई थी , तब उन्होंने जयपुर (खानिया जी) के चन्द्रप्रभु मंदिर में शांति भक्ति का पाठ किया था तब 52 घंटों के बाद नेत्र ज्योति वापस आई थी।

वात्सल्य वारिधि : उनकी वाणी में करुणा है, दृष्टि में करुणा है, व्यवहार में ममत्व है, और प्रवचन में आत्मीयता। इसलिए उन्हें समग्र जैन समाज ने इस उपाधि से सुशोभित किया।

शास्त्रज्ञान और तत्त्वचिंतन की गहराई : आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी—समयसार, गोम्मटसार, मूलाचार,प्रवचनसार, तत्त्वार्थसूत्र, अष्टपाहुड़ जैसे आगम ग्रंथों के ज्ञाता हैं। वे ज्ञान और भावना का समन्वय करते हैं।उनके प्रवचन न तो केवल भाषण होते हैं और न ही केवल पाठ — बल्कि

आत्मा को झकझोरने वाले संवाद होते हैं।

"जो जीवन में जैनागम को उतारे,
वही गुरु है जो आत्मा को संवारे।"

चारित्र चक्रवती प्रथमाचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण पट्टपरम्परा के चतुर्थ पट्टाचार्य श्री 108 अजितसागर जी महाराज पत्र के माध्यम से लिखित आदेश अनुसार पारसोला राजस्थान में 24 जून 1990 आषाढ़ सुदी दूज को आचार्य पद गुरु आदेश अनुसार दिया गया।

दीक्षाएं : शिष्य निर्माण: आत्मा से आत्मा का संवाद -आचार्यश्री के शिष्य मंडल में मुनि, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक-क्षुल्लिका और संयमियों की लंबी परंपरा है। वे शिष्यों के चयन में कठोर होते हैं, पर प्रशिक्षण में अत्यंत प्रेममयी। उनके लिए संयम एक संस्कार की प्रक्रिया है, न कि केवल व्रतों की खानापूर्ति।

आचार्य श्री वर्धमानसागर जी गुरुदेव ने अभी तक 116 दीक्षाएं देकर श्रमण संस्कृति को महनीय अवदान दिया है।

मुनि दीक्षा	41
आर्यिका	45
ऐलक	02
क्षुल्लक	15
क्षुल्लिका	13

सल्लेखना समाधि :

वात्सल्य वारिधि यथा नाम तथा गुण यह पंक्ति आप पर चरितार्थ होती है। आप साधुओ की सल्लेखना इतने वात्सल्य भाव मनोयोग करुणा भाव से कराते हैं कि हर श्रावक- श्राविका साधु की यही कामना होती है कि उनका उत्कृष्ट समाधिमरण आपके सान्निध्य में हो।

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा :

आचार्य पद के बाद 60 से अधिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आपके सान्निध्य में हुई हैं।

प्रभावनामयी चातुर्मास :

आचार्यश्री ने 12 राज्यों राजस्थान, दिल्ली ,हरियाणा, उत्तर प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक ,तमिलनाडु, झारखंड, बिहार ,बंगाल व मध्यप्रदेश में ये मंगल प्रभावनामयी चातुर्मास किये हैं।

विहार शैली: लोकजागरण का माध्यम : वे आज भी अपने संघ के साथ वर्षभर पदविहार करते हैं। तपती धूप, वर्षा और ठंडी हवाओं के बीच उनके चरणों से निकले हजारों किलोमीटरों के विहार आज के लिए संयम की जीवंत कक्षा हैं।

वर्तमान युग में प्रासंगिकता : जब आज का समाज भौतिकता में डूब रहा है,नैतिकता से भटक रहा है, और युवापीढ़ी दिशाहीन हो रही है, तब आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी जैसे संत मार्गदर्शक बनकर कहते हैं: "जो भोगों के पीछे भागता है, वह आत्मा को खो देता है।जो आत्मा को साधता है, उसे सब प्राप्त हो जाता है।"

गोमटेश्वर महामस्तकाभिषेक में तीन बार सानिध्य :

उल्लेखनीय है कि श्रवणबेलगोला कर्नाटक में बाहुबली भगवान के सुप्रसिद्ध महामस्तकाभिषेक में वर्ष 1993, 2006 एव वर्ष 2018 में प्रमुख नेतृत्व दिया गया। श्री श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक में भारत के राष्ट्रपति जी , प्रधानमंत्री जी

मुख्यमंत्री जी, राज्यपाल सहित अनेक वरिष्ठ राजनेताओं ने आशीर्वाद प्राप्त कर जीवन को धन्य बनाया।

अचार्यश्री से जुड़े विशेष उल्लेखनीय तथ्य :

1. पानी की व्यवस्था गुजरात में आहार के लिए पानी कुए का पानी लबालब हुआ।
2. श्रवणबेलगोला में 1993 में मूसलाधार वर्षा से पानी की समस्या दूर।
3. कोथली में प्रवेश के पूर्व नदी- नाले,कूप पानी से लबालब।
4. कमंडलु के पानी से श्रावक बालक को नया जीवन मिला।
5. 13 का अशुभ अंक बना शुभ- आपके जन्म के पूर्व 8 भाई और चार बहनों ने जन्म लिया जो काल के ग्रास बने। 13 वी संतान का अंक आपके जन्म से शुभ बना और आप जगत के तारणहार हो गए मानव से महामानव हो गए। आप के बाद चौदहवीं संतान भी बाद में जीवित नहीं रही।आप माता-पिता की एकमात्र जीवित संतान हैं।
6. पैर में चक्र :कनक गिरी में आपके पैर में कष्ट होने पर भट्टारक स्वामी जी ने देखा कि आपके पैर में चक्र है जो कि इस बात का सूचक है कि आचार्य श्री वर्धमानसागर जी के द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार और बहुत प्रभावना होगी।
7. अद्भुत संयोग: बारह संतानों के निधन के कारण माता-पिता ने श्री महावीरजी में उल्टा स्वस्तिक बनाकर उनके लंबे जीवन की कामना की थी, यह संकल्प किया था कि इनके जन्म के बाद इनके बाल उतारेंगे इनके बाल निकालेंगे। संयोग कहें कि इनकी मुनि दीक्षा वही श्री महावीरजी में हुई और उनके केशलोच हुए।
8. पद के प्रति उदासीनता। उपाध्याय पद लेने से इनकार।
9. अचार्यश्री का प्रमुख संदेश समाज में कैंची नहीं सुई बनकर रहो। जहाँ जो परंपरा चल रही है उससे छेड़छाड़ न करें।
10. अपूर्व वात्सल्य : इचलकरंजी सहित अनेक नगरों की समाज को एक किया। बीमार श्रावक को दर्शन देने स्वयं चलकर गए। टोडारायसिंह में दिगंबर श्वेतांबर समाज को एक किया।
11. कोई प्रोजेक्ट नहीं। पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी के नाम पर कोई क्षेत्र या गिरी नही है। श्रावक के दान का सदुपयोग हो यही उनकी मंगल प्रेरणा रहती है।
12. पूर्वाभास : पूर्वाभास के कारण एक स्थान पर रात्रि विश्राम नहीं किया। मैरिज गार्डन के कारण कुछ श्रावको ने वहां विश्राम किया। उस गांव के बारूद फैक्ट्री में अचानक आग लगती है और सभी श्रावक रात्रि में आचार्यश्री के पास पहुंचते हैं। तब पता लगता है कि रात्रि को गांव में आग लग गई थी और जान माल का खतरा हो गया

था।

वर्तमान के वर्द्धमान : आचार्य श्री वर्द्धमानसागर वर्तमान के वर्द्धमान के समान साधना और प्रभावना कर रहे हैं। उनके जीवन की बहुत विशेषताएं हैं। वे परिस्थितियों के सामने झुके नहीं, उपसर्गों व परीषहों से वे डरे नहीं और रुके नहीं, निरंतर गतिमान उनका जीवन रहा है और आदर्शमय चारित्र के द्वारा जहां एक ओर धर्म की प्रभावना की उसके साथ ही उन्होंने आदर्श जीवन को रखकर हम सब का मार्गदर्शन कर रहे हैं। उनका मार्ग आगम सम्मत ही होता है। हमारी संस्कृति की सुरक्षा में उनका अविस्मरणीय अवदान है।

विचार और आचार की क्रिया विधि रूप जीवन शैली में अद्भुत सहजता है आचार्यश्री वर्द्धमान सागर जी में, इसीलिए वे वात्सल्य वारिधि हैं एवं विचार और आचार परिशुद्धि में निरंतर वर्द्धमान।

आचार्यश्री का समन्वय का सूत्र : आचार्यश्री का कहना है कि मैं अपनी क्रिया छोड़ूंगा नहीं और आपको अपनी क्रिया करने के लिए बाध्य भी नहीं करूंगा। यह समन्वय का सूत्र उन्होनें दिया है। आज समाज में जो अनेक विसंगतियां देखने को मिल रहीं हैं यदि आचार्यश्री के इस समन्वय सूत्र को अपना लें तो विसंगतियों पर विराम लग सकता है।

आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी श्रमण परम्परा व धर्म और संस्कृति की ध्वजा निरंतर लहरा रहे हैं।

मेरा सौभाग्य रहा है कि पूज्य आचार्यश्री का मंगल आशीर्वाद मुझे अनेकों अवसरों पर मिला है तथा उनके सान्निध्य में आयोजित विद्वत संगोष्ठियों का संयोजन करने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा पुरस्कार समर्पण समारोह में भी संयोजन करने का सुअवसर मिला है।

परम पूज्य आचार्यश्री की प्रेरणा से यह वर्ष चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज आचार्य पद पदारोहण शताब्दी वर्ष के रूप में पूरे देश में मनाया जा रहा है। इसके पूर्व सन 2019 में मुनि दीक्षा शताब्दी वर्ष भी आपकी प्रेरणा से राष्ट्रीय स्तर पर मनाया गया था, जिसका भव्य समापन आचार्य श्री शांतिसागर जी की मुनि दीक्षा स्थली यरनाल, कर्नाटक में आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी के ही सान्निध्य में हुआ था।

आचार्य वर्द्धमानसागर जी महाराज मात्र एक मुनि , आचार्य या प्रवचनकर्ता नहीं — वे हैं—दिगंबर चारित्र परंपरा के प्रतीक,संयम के आदर्श उदाहरण,आगम परंपरा के संरक्षक और वात्सल्य से ओतप्रोत मानवता के उपदेशक हैं।उनका जीवन धर्म की अखंड ज्वाला है, जिसमें हर आत्मा यदि थोड़ा-सा ताप ले, तो जीवन दिशा बदल सकती है।

परम पूज्य आचार्य प्रवर के 36वें आचार्य पदारोहण दिवस पर उनके पावन चरणों में कोटिशः नमोस्तु!!!

ये जन -जन के आराध्य गुरु, ये भक्तों के भगवान, आचार्य श्रेष्ठ हे वर्द्धमान, तुम श्रमणों के अभिमान।

वर्षायोग पुण्य संचय का अवसर है
– आचार्य विशदसागर जी

क्षमामूर्ति आचार्य विशदसागर जी

''वर्षायोग में मन्दिर जी में होने वाले विविध अनुष्ठानों में सम्मिलित होने से असीम पुण्य का संचय होता है। पिछले जन्म में किये गये धर्मकार्यो का लाभ हम इस भव में उठा रहे है एवं इस भव में किये जाने वाले पुरूषार्थों का लाभ अगले भव में मिलेगा। आप लोग जीवन बीमा कराते है तो आपकी मृत्यु के बाद परिजनों को लाभ मिलता है, किन्तु आपके द्वारा किये गये पुण्य कार्यो का लाभ स्वयं आपको अगले भव में मिलेगा।'' आपने समाज का आह्वान किया कि आगामी अष्टान्हिका में होने वाले सिद्धचक्र विधान में सम्मिलित होकर सिद्धों की आराधना करें।

इससे पूर्व आचार्य श्री विशदसागर जी एवं उपाध्याय श्री शीतलसागर जी समेत ८ संतों का भव्य मंगल प्रवेश वर्षायोग हेतु श्री दि. जैन मन्दिर सुदामानगर, इंदौर में हुआ। रणजीत हनुमान मन्दिर से गाजे—बाजे एवं शताधिक श्रद्धालुजनों सहित गुरुवर मन्दिर पधारे। मार्ग में पाद प्रक्षालन कर आरती उतारी गई।

डॉ. अनुपम जैन ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए दि. जैन मन्दिर सुदामानगर, इंदौर का इतिहास बताया एवं समाज की ओर से वर्षायोग हेतु निवेदन किया। नवयुवक मण्डल, महिला मण्डल, अभिषेक मण्डल समेत सम्पूर्ण समाज ने श्रीफल समर्पित कर आशीर्वाद किया। परिवहन नगर, नेमीनगर, माणकचौक, ७१ नं. सहित अनेक कालोनियों से पधारे श्रावकों ने गुरुवर की वन्दना की।

दि. जैन समाजिक संसद के अध्यक्ष श्री राजकुमार पाटोदी एवं फेडरेशन के अध्यक्ष श्री मनोहर झांझरी ने भी श्रीफल समर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

श्री पदमचंद मोदी ने सभी का स्वागत किया एवं सभा का सशक्त संचालन श्री विमल झांझरी ने किया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

उत्तर प्रदेश -उत्तराखण्ड अंचल

प्रबंधकारिणी समिति की मिटिंग

रविवार 29 जून 2025

स्थान - श्री त्रिलोकतीर्थ धाम बड़ागांव

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड अंचल की प्रबंध समिति की एक महत्वपूर्ण बैठक रविवार, 29 जून 2025 को अतिशय क्षेत्र श्री दिगम्बर जैन त्रिलोकतीर्थ धाम बड़ागांव खेकड़ा जिला बागपत में उत्तर प्रदेश में सम्पन्न हुई। इसमें निम्नलिखित सदस्यों की उपस्थिति निम्नलिखित है।

1. श्री जम्बू प्रसाद जैन, गाजियाबाद
2. श्री आर.सी. जैन, गाजियाबाद
3. श्री जीवेन्द्र जैन, गाजियाबाद
4. श्री अखिलेश कुमार जैन, गाजियाबाद
5. श्री पुष्पेन्द्र जैन, काशीपुर
6. श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ
7. श्री आलोक कुमार जैन, शामली
8. श्री मंयक जैन, शामली
9. श्रीमती भावना जैन, बुलन्दशहर
10. श्री मनोज जैन, बुलन्दशहर
11. श्रीमती मीनू जैन, गाजियाबाद

12. श्रीमती शोभा जैन, गाजियाबाद
13. श्रीमती सुनयना जैन, लखनऊ
14. कु. ऋद्धिमा जैन, लखनऊ
15. श्रीमती नीलम जैन, बड़ौत
16. श्री महेन्द्र जैन, हाथरस
17. श्री सुनील जैन, मेरठ
18. श्री सचिन जैन, बड़ौत
19. श्री शांति स्वरुप जैन, मेरठ
20. श्री एम.एस.जैन, मेरठ
21. श्री विनोद बिहारी जैन, रामपुर
22. श्री सुशील जैन, गाजियाबाद
23. श्री प्रशांत कुमार जैन, पटना
24. श्री अनिल जैन, अंचल, ललितपुर
25. श्री जवाहरलाल जैन, सिकन्द्राबाद
26. श्री सन्देश कुमार जैन, बिलासपुर
27. श्री अनिल कुमार जैन, हाथरस
28. श्री विजय कुमार जैन, हाथरस
29. ब्र. नवीन भैया, त्रिलोकतीर्थधाम
30. श्री अनिल जैन कनाड़ा, दिल्ली
31. श्री प्रमोद जैन, बड़ौत

✵ सर्वप्रथम श्री जीवेन्द्र जैन गाजियाबाद द्वारा मंगलाचरण से सभा का प्रारम्भ किया।

✵ महामंत्री श्री सन्देश कुमार जैन बिलासपुर ने गत बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनाई जिसकी सर्वसम्मति से पुष्टि की गई।

✵ उत्तर प्रदेश उत्तराखण्ड अंचल के अध्यक्ष श्री जवाहर लाल जैन द्वारा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी संस्था के 125 वर्ष पूर्ण होने पर 22 अक्टूबर 2026 से 22 अक्टूबर 2027 महोत्सव रुप मनाने हेतु किए जाने वाले कार्यक्रमों के माध्यम से तथा अंचलों द्वारा किए जाने वाले प्रयास रुप कार्यक्रमों के माध्यम से तीर्थक्षेत्र कमेटी को आर्थिक रुप से मजबूत किए जाने के प्रयासों को लागू करने का जोर दिया। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की कूपन योजना के द्वारा प्रत्येक जैन परिवार को कूपन के माध्यम से तीर्थों से जोड़ने का आहवान किया। घर-घर गुल्लक योजना, प्रत्येक मन्दिर को गुल्लक के माध्यम से सभी को तीर्थक्षेत्र कमेटी से जोड़ने की योजना के विशय में विसतार से बताया। आंचलिक अध्यक्ष श्री जवाहर लाल जैन ने सभी से अनुरोध किया कि आपके नगर अथवा आस पास के क्षेत्र में जहां पर भी चातुर्मास हो रहे है उन सभी स्थानों पर तीर्थक्षेत्र कमेटी सुरक्षा कलश रखवाने की व्यवस्था करें जिसके लिए सभी सदस्यों ने सहज स्वीकृति प्रदान की।

✵ गाजियाबाद के वरिष्ठ सदस्य आर्किटेक्ट श्री आर.सी.जैन जी ने प्रत्येक दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों पर तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक रखने तथा प्रत्येक मन्दिर में गुल्लक रखवाने पर जोर देते हुए अपने सहयोग का भरोसा दिया।

✵ कार्यकारी अध्यक्ष श्री विनोद बिहारी जी जैन ने उत्तर प्रदेश अथवा केन्द्र सरकार से सरकारी अनुदान प्राप्त करने के हर सम्भव सहयोग देने का प्रयास रखा।

✶ श्री अनिल जैन कनाड़ा ने तीर्थक्षेत्रों पर सरकारी अनुदान प्राप्त करने के विशय में विस्तार से बताया।

✶ श्री आलोक जैन शामली ने प्रत्येक मन्दिर के अध्यक्ष और मंत्री को 11000रु. का सदस्य बनाने तथा प्रत्येक मन्दिर में गुल्लक रखने में अपने पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाया तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा प्रस्तावित चातुर्मास कलश को प्रत्येक चातुर्मास समिति को सौपनें का प्रस्ताव रखा।

✶ श्री संजीव जैन हाथरस से अपने क्षेत्र में तीर्थक्षेत्र कमेटी को आंचलिक बैठक बुलवाने का प्रस्ताव दिया।

✶ श्री प्रशांत जैन आरा ने कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी के वर्तमान अध्यक्ष का निर्विरोध रुप से चयन हुआ है जो अत्यन्त हर्ष का विषय है अब कमेटी को मजबूती प्रदान करने के लिए अध्यक्ष जी को निर्णयात्मक निर्णय लेने चाहिए।

✶ श्री त्रिलोक जैन बड़ागांव ने अल्पसंख्यक आयोग द्वारा धार्मिक क्षेत्र में दिए जाने वाले अनुदान को प्राप्त करने में अपना साथ देने का भरोसा दिया।

✶ श्री अनिल जैन अंचल, ललितपुर ने तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा नए

तीर्थों को जोड़कर तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा सम्बद्धता से होने लाभ की विस्तृत

नाम	कूपन 1100/-	कूपन 500/-
श्री आर.सी जैन, गाजियाबाद	100	100
श्री पुष्पेन्द्र जैन, काशीपुर	25	100
श्री अनिल जैन अंचल, ललितपुर	250	1000
श्रीमती सुनयना जैन, लखनऊ	100	100
श्री आलोक जैन, शामली	50	50
श्री अनिल जैन, बड़ौत	100	100
श्री संजीव जैन, हाथरस	25	100
श्रीमती शोभा जैन, गाजियाबाद	100	100

जानकारी क्षेत्रों को दिए जाने व अधिकाधिक तीर्थों को कमेटी से जोड़ने पर जोर दिया।

✷ श्री मनोज जैन मेरठ ने कहा तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तरोत्तर विकास करते हुए अधिक से अधिक तीर्थों के संरक्षण में सहयोग करेंगे।

✷ श्रीमती सुनयना जैन लखनऊ ने अपना पूर्ण सहयोग तीर्थक्षेत्र कमेटी के विकास के लिए देने का भरोसा दिलाया तथा लखनऊ में तीर्थक्षेत्र कमेटी की अगली मिटिंग का प्रस्ताव रखा।

✷ श्रीमती मीनू जैन गाजियाबाद ने तीर्थक्षेत्र कमेटी में महिला शक्ति को जोड़ने का आवाह्न सभी क्षेत्रों के प्रतिनिधियों से किया और ललितपुर में महिला इकाई के गठन की जानकारी दी।

✷ श्री सचिन जैन बड़ौत को उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड अंचल द्वारा तीर्थों रक्षण संरक्षण पर किए गए कार्यो पर विशेषांक बनाने की जिम्मेदारी सौंपी गई।

✷ अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जी जैन ने तीर्थक्षेत्र कमेटी सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए अधिक से अधिक सदस्य बनाने, मन्दिरों को, तीर्थों को जोड़ने के लिए प्रेरित करने क्षेत्रों और मन्दिरों में तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक स्थापित करने, कूपन योजना के माध्यम से वार्षिक अनुदान राशि प्राप्त करने, चातुर्मास में साधुओं और समाज के समर्थन से चातुर्मास कलश स्थापित करने के लिए सभी से अपना सहयोग देने का आह्वान किया।

इस बैठक के आतिथ्य के लिए श्री प्रमोद कुमार जैन बड़ौत कुमार उद्योग को दय से व आभार प्रकट किया। जिन्होंने श्री त्रिलोकतीर्थ धाम की ओर से श्री त्रिलोक जैन के साथ सभी का स्वागत, अभिनन्दन किया। नाश्ते भोजन आदि की व्यवस्था के लिए श्री प्रमोद जैन बड़ौत कुमार उद्योग का सभी ने आभार प्रकट किया।

बैठक के अन्त में श्री प्रमोद जैन बड़ौत ने सभी से बैठक को सफल बनाने के लिए आभार धन्यवाद दिया।

कमेटी के सदस्यों द्वारा निम्नांकित कूपन के माध्यम से तीर्थक्षेत्र कमेटी को सुदृढ़ता प्रदान करने की बात कही।

णमोकार तीर्थ चादवड़ नाशिक के भव्य पंचकल्याणक महोत्सव के लिए उपराष्ट्रपति जी ने दी सहमती

आज दिल्ली में प्रफुल्लजी पटेल के नेतृत्व में णमोकार तीर्थ के पदाधिकारियों ने उपराष्ट्रपति श्री जगदीशजी धनखड जी से मुलाकात कर उन्हें निमंत्रण दिया। जिसे उन्होंने सहर्ष स्वागत कर पंचकल्याणक के दौरान उपस्थित रहने हेतु सहमति प्रदान की।

इस टीम में सांसद श्री प्रफुल्लजी पटेल एवं महोत्सव समिती के अध्यक्ष संतोषजी जैन पेंढारी के नेतृत्व में संतोषजी काला, विजयजी लोहाडे, भूषणजी कासलीवाल, सुमेरजी काला, पवनजी पाटणी शामिल थे। गौरतलब है कि, प.पू. आचार्य श्री देवनन्दीजी गुरुदेव के कल्पना से साकार हो रहे णमोकार तीर्थ पर प. पू. गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव के प्रमुख उपस्थिति एवं युगल मुनिश्री अमोघकिर्तीजी एवं अमरकिर्तीजी गुरुदेव के मार्गदर्शन में ६ से १३ फरवरी २०२६ को भव्य अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक महोत्सव होने जा रहा है। जिसमें ४०० से ज्यादा जैन साधु उपस्थित रहनेवाले है।

ट्रस्ट अध्यक्ष नीलमजी अजमेरा ने कहा कि, धनखड जी के सहमति मिलने से उत्साह का माहौल है। इसी महोत्सव में आरएसएस प्रमुख श्री मोहनजी भागवत भी १० फरवरी को उपस्थित रहनेवाले है।

नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल औरंगाबाद

गिरनार सिद्ध क्षेत्र पर शांतिपूर्ण रूप से मनाया निर्वाण महोत्सव: राष्ट्रीय संस्थाओं, जैन समूह ने चढ़ाया निर्वाण लाडू

विश्व शांति निर्मल ध्यान केंद्र ट्रस्ट गिरनार, जूनागढ़ के तत्वावधान में जैन धर्म के २२ वें तीर्थंकर भगवान नेमीनाथ जी का मोक्ष कल्याणक १-२ जुलाई को शांतिपूर्ण तरीके से मनाया गया। निर्मल ध्यान केंद्र में स्थित २२ फीट उतंग भगवान नेमीनाथ जी की प्रतिमा पर महामस्तकाभिषेक किया गया। शांतिधारा की गई। इस अवसर पर आचार्य श्रीसुधींद्र सागर जी महाराज, मुनि श्री धरसेन सागर जी महाराज, मुनि श्री अजितसेन सागर जी महाराज के आशीर्वाद और सानिध्य में क्षुल्लक समर्पण सागर जी महाराज व ब्र. शांताबेन, ब्र सुमति भैय्या जी के निर्देशन में महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री पारस जैन बज अहमदाबाद की अध्यक्षता में, संरक्षक श्री सौभागमल कटारिया अहमदाबाद, अतिथिगण भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन गाजियाबाद, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी नागपुर, ग्लोबल महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जमनालाल हपावत मुंबई, महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज गंगवाल दिल्ली, विश्व जैन संगठन के राष्ट्रीय श्री अध्यक्ष संजय जैन दिल्ली आदिनाथ चैनल के अध्यक्ष श्री पवन गोधा दिल्ली, जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री उदयभान जैन जयपुर, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद् के राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री दिलीप जैन जयपुर के आतिथ्य में निर्वाण महोत्सव मनाया गया।

श्री जी की रथयात्रा निकाली गई

आचार्य श्री सुधीन्द्र सागर जी ने सभी उपस्थित लोगों को आशीर्वचन में कहा कि जिस प्रकार इस बार देश के विभिन्न प्रांतों से भारी संख्या में लोग आए हैं उसी प्रकार प्रतिदिन, प्रति सप्ताह, प्रति माह, प्रति वर्ष अधिक से अधिक संख्या में समूह के रूप में गिरनार जी की यात्रा के साथ अन्य क्षेत्रों की भी यात्रा अवश्य करें। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन जयपुर ने बताया कि समोशरण मंदिर में १ जुलाई को आचार्य निर्मल सागर जी महाराज का ५८ वां दीक्षा दिवस के अवसर पर शांतिधारा अभिषेक की क्रियायें संपन्न की गयी।

समोशरण मंदिर जी की तलहटी स्थित निर्मल ध्यान तक विशाल श्री जी की रथयात्रा निकाली गई। मार्ग में बंडी मंदिर जी में रथयात्रा का स्वागत किया गया। सभी ने अभिषेक व निर्वाण लाडू के दर्शन किये। शांतिधारा में बसंत बाकलीवाल परिवार जयपुर थे। दोपहर को २३० बजे दीक्षा दिवस पर आचार्य श्री की पूजा व आचार्य श्री, अतिधि व श्रेष्ठियों ने आचार्य श्री निर्मल सागर जी महाराज के योगदानों का गुणानुवाद किया। सभा का संचालन महामंत्री ऋषभ जैन अहमदाबाद व समस्त कार्यक्रमों का संयोजन रतन पाटनी संयोजक महोत्सव समिति द्वारा किया गया। रात्रि को नेमीनाथ भगवान की वैराग्य जीवन गाथा पर आधारित नाट्य विरह और वैराग्य की

प्रस्तुति निर्देशिका जैन रत्न साधना मादावत इंदौर एवं रंगशाला टीम द्वारा की गई जो विशेष सराहनीय था।

२ जुलाई को प्रातः २ बजे से ही उपस्थित विशाल जैन समूह ने पहली से पांचवीं टॉक पर पैदल पदयात्रा की। पहली टॉक पर मंदिर जी में लाडू चढ़ाया तथा पांचवी टोंक पर उल्लास व शांतिपूर्ण तरीके से दर्शन कर पुण्य अर्जित किया। दोपहर को 3 बजे से धर्म सभा का आयोजन किया गया। जिसमें आचार्य श्री ने अतिथियों व श्रेष्ठियों द्वारा गिरनार सिद्धक्षेत्र के संबंध में विस्तृत रूप से अवगत कराया गया। महोत्सव समिति ने उपस्थित अतिथियों का सम्मान किया। समोशरण मंदिर में स्थित मानस्तंभ के समक्ष २२ किलो का प्रथम निर्वाण लाडू श्रेष्ठी, भामाशाह संरक्षक सोभागमल कटारिया अहमदाबाद परिवार एवं ज्ञानचंद महावीर कुमार बडजात्या परिवार कोलकाता ने समवशरण मंदिर में निर्वाण लाडू समर्पित किया। सभी उपस्थित जन समूह ने निर्वाण लाडू समर्पित किया।

२५००० से अधिक धर्मावलंबियों ने लाभ अर्जित किया

इस बार देश के विभिन्न प्रांतों से लगभग २५००० से अधिक धर्मावलंबियों ने उपस्थित होकर दोपहर को समवशरण मंदिर जी परिसर में स्थित मानस्तम्भ के सामने निर्वाण कांड बोलकर २२ किलो का प्रथम लाडू संरक्षक सोभागमल कटारिया परिवार द्वारा समर्पित किया गया, इसी समय समवशरण मंदिर जी में ज्ञानचन्द महावीर बडजात परिवार कोलकाता द्वारा निर्माण लाडू समर्पण किया गया। महोत्सव समिति के संयोजक रतन पाटनी ने बताया कि समिति ने श्रद्धालुओं की भोजन व्यवस्था, आवास, यातायात व्यवस्था व्यवस्था निशुल्क कराई गई। इस बार विशेष आकर्षण विश्व जैन संगठन की टीम का रहा जो २२०० किमी की दिल्ली से गिरनार पदयात्रा कर २ जुलाई को पांचवी टॉक पर शांतिपूर्ण वातावरण में दर्शन किए। महोत्सव समिति के अध्यक्ष पारस जैन बज ने सभी उपस्थित व अतिधियों, प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वालों का स्वागत व आभार व्यक्त किया।

जैन मंदिर की संपत्ति पर अवैध कब्जे का प्रयासः समाजजनों में भारी आक्रोश दिया धरना

ग्वालियर / थाटीपुर। स्थानीय जैन मंदिर की दीवार तोड़कर मंगलवार की रात असामाजिक तत्वों ने क्षतिग्रस्त करने का प्रयास किया। ग्वालियर के थाटीपुर में जैन मंदिर गुलाबचंद की बगीची में दिगंबर जैन समाज गत 100 वर्षों से पूजा कर रहा है और यह जैन समाज की आस्था का केंद्र है। यह प्रकरण ग्वालियर उच्च न्यायालय में प्रकरण क्रं. 411/2006 से लंबित है और यथास्थिति बनाए रखने का आदेश है। 1-2 जुलाई की रात्रि में बड़ा सा तिरपाल डालकर गोपनीय तरीके से मंदिर की दीवार व गेट तोड़कर मंदिर में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा को क्षतिग्रस्त करने और सम्पत्ति में अवैध कब्जा करने का प्रयास किया गया। बुधवा सुबह 6 बजे जब जैन समाज के लोग मंदिर में दर्शन पूजन के लिए तब देखा गया कि रात्रि के अंधेरे में लोगों ने दीवार तोड़कर लोहे के दो गर्डर लगा दिए हैं और शटर लगाकार दो दुकानों पर कब्जा करने का असफल प्रयास किया गया। थाटीपुर जैन मंदिर की संपूर्ण भूमि का मालिकाना हक जैन मंदिर में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ मूर्ति के नाम सन् 1935 रजिस्टर्ड के अनुसार है।

वर्तमान में मंदिर जी का प्रकरण ग्वालियर उच्च न्यायालय में विचाराधीन है। असामाजिक तत्वों ने सुबह से एकल व समूह में आकर धरने पर बैठे जैन समाज को देख लेने की धमकी दी और कहा कि देखते हैं कैसे रोकोगे। इस घटना से जैन समाज बहुत भयभीत है। प्रशासन से निवेदन है कि समाज की संपत्ति की रक्षा के लिए आवश्यक पुलिस गार्ड नियुक्त किए जाएं। जब तक अवैध तरीके से तोड़ी दीवार पुनः निर्माण नहीं हो जाता। श्री दिगम्बर गोलालारे जैन समाज प्रबंध कार्यकारिणी समिति. थाटीपुर ने यह मांग की है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय पदाधिकारियों की बैठक संपन्न

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी जैन की अध्यक्षता में दिनांक २२ जून २०२५ को श्री दिगम्बर जैन सिद्धांत क्षेत्र शिकोहपुर हरियाणा में पदाधिकारि परिषद् की बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में तीर्थक्षेत्रों के विकास व संरक्षण से सम्बंधित अनेकों विषयों पर चर्चा विचारणा कर महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

क्षेत्र पर विराजमान पूज्य आर्यिका सुज्ञानीमती माताजी की शिष्या बा.ब्र. समीक्षा दीदी जी के मंगलाचरण के पश्चात भगवान महावीर स्वामी के चित्र का अनावरण एवं द्वीप प्रज्ज्वलन की विधि राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी जैन की अध्यक्षता में पधारे हुए सभी महानुभावों की उपस्थिति में संपन्न हुई। तत पश्चात पूज्य आर्यिका श्री सुज्ञानीमती माताजी से सभी ने आशीर्वाद प्राप्त कर उनसे मार्गदर्शन देने की अपील की माताजी ने सभी को तीर्थों की रक्षा सुरक्षा करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए सभी पदाधिकारियों को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। पश्चात सभी महानुभावों को दुपट्टा एवं हार

पहनाकर स्वागत किया गया। बैठक का संचालन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी ने किया।

श्री जम्बूप्रसाद जी जैन, गाजियाबाद राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रदीप जी जैन (पीएनसी) आगरा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री संजय पन्नालाल पापड़ीवाल पैठण राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, श्री संतोष जैन पेंढारी नागपुर राष्ट्रीय महामंत्री, श्री अशोक दोशी मुंबई राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, श्री हंसमुख जैन (गांधी), इन्दौर राष्ट्रीय मंत्री, डॉ. जीवन प्रकाश जैन, हस्तिनापुर, राष्ट्रीय मंत्री, श्री जवाहरलाल जैन, सिकंदराबाद (उ.प्र.) अध्यक्ष- उत्तरप्रदेश उत्तराखंड अंचल, श्री प्रद्युमन कुमार जैन, दिल्ली अध्यक्ष – दिल्ली अंचल, श्री डी.के. जैन, इंदौर अध्यक्ष –

मध्यांचल, श्री संजय ठोलिया, पौण्डिचेरी अध्यक्ष – केरल,तमि . आंध्र,& पौण्डिचेरी अंचल श्री दिनेश सेठी, चेन्नई पूर्व अध्यक्ष- केरल, तमि, आंध्र & पौण्डिचेरी अंचल, श्री राजकुमार घाटे, इंदौर महामंत्री – मध्यांचल उपस्थित रहे। इसके पश्चात् ही कमेटी की प्रबंधकारिणी की बैठक भी संपन्न हुई जिसमें कमेटी द्वारा किये गये कार्यों की समीक्षा की गयी।

गतांक से आगे...... (गतांक पृष्ठ संख्या - 16, 17 और 18)

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र कमठाण 585226 ता. जि. बीदर, कर्नाटक

उपरोक्त इस अतिशय क्षेत्र को जीर्णोद्धार या ध्रुव फंड आहार दान इत्यादि में दान देने के इच्छुक व्यक्ति निम्न पते पर संपर्क करें।

Sri Parshwa Prabhu Digamber Jain Kalyan & Critable Trust
SBI A/c. No. 40333044328
IFSC-SBIN0040394

विषय संग्रह और संपर्क
विजयकुमार जैन अडवोकेट
और गौरव अध्यक्ष जैन मिलन बिदर
मो: 9845334456

नरसिंहराजु जिनेंद्र टिके
मुख्य ट्रस्टी
मो: 9886285650

नवागढ़ में पुरा संपदा का अन्वेषण एवं संरक्षण
नवागढ़ तीर्थक्षेत्र भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर
पहाड़ियों से मिल चुके हैं हजारों वर्ष पुराने औजार

नवागढ़ तीर्थ क्षेत्र का इतिहास काफी पुराना विलक्षण कलाकृतियां एवं भारतीय कला संपदा का अक्षय भंडार है नवागढ़ भूगर्भ से प्राप्त मूलनायक अरनाथ के अतिशय की है प्रसिद्धि, होती है मनोकामना पूरी।

ललितपुर। शहर से 65 किलोमीटर दूर महरौनी विकासखंड में सोजना के निकट स्थित नवागढ़ तीर्थक्षेत्र है। यहां का इतिहास काफी पुराना है। यहां खुदाई कहीं भी हो बड़ी ही सावधानी से की जाती है क्योंकि यहां पर कई अति प्राचीन मूर्तियां एवं पुरातात्विक साक्ष्य, औजार मिलते हैं।

प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में भगवान अरनाथ स्वामी के अतिशय के साथ संरक्षित हजारों वर्ष प्राचीन शैलाश्रय, 8000 वर्ष प्राचीन जैन रहस्य वाले शैलचित्र, 3000 वर्ष प्राचीन उत्कीर्ण कला तथा सातवीं सदी के स्थापत्य कलायुक्त भौंयरा एवं मूर्ति शिल्प जैन धर्म की प्राचीनतम एवं महत्वशाली साक्ष्य हैं।

पुरा संपदा :

यहां संग्रहीत पुरा संपदा में पाषाण कालीन औजार, मूर्ति शिल्प, चंदेल बावड़ी, काष्ठ बेदी, काष्ठ मानस्तंभ, काष्ठ मंदिर, काष्ठ परात मिट्टी के विशिष्ट शिल्प, धातु शिल्प आभूषण, रजत एवं ताम्र के सिक्के, पाषाण मिट्टी एवं रतन के मनके प्राचीन गाथा के सशक्त साक्ष्य हैं।

संरक्षण :

इस पुरा संपदा का रासायनिक संरक्षण एन आर एल सी लखनऊ के प्रशिणार्थी 25- 25 छात्रों द्वारा कई शिविरों में सतत संरक्षण का कार्य डॉक्टर वी बी खरबड़े के निर्देशन तथा श्री पी के पांडे के सानिध्य में संपन्न हुआ है।

शोध ग्रंथ :

डॉ अर्पित रंजन पुरालेख विद् भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ए एस आई दिल्ली ने यहां के अभिलेख एवं पुरातत्व पर डॉ प्रकाश राय के निर्देशन में वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया है।

श्रीमती अर्चना जैन पम्मी बरायठा ने एकलव्य विश्वविद्यालय के निदेशक आर सी फौजदार एवं डॉ अभिषेक जैन के निर्देशन में नवागढ़ साहित्य पर शोध कार्य आरंभ किया है। जो लगभग पूर्ण होने को है।

श्री संजय जी आठिया ने नवागढ़ के संलग्न नगरों में पुरातात्विक धरोहर विषय पर सर हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय सागर से शोध कार्य कर रहे हैं।

संरक्षण एवं आकलन :

नवागढ़ क्षेत्र की पुरा संपदा के शोध, काल निर्धारण, धार्मिक, ऐतिहासिक, एवं पुरातात्विक विश्लेषण के लिए पनस एन जी ओ दिल्ली की पांच सदस्यीय अन्वेषण टीम श्री राज कुंवर विष्ट के निर्देशन में कार्यरत हैं। आपने यहां संग्रहीत कला शिल्पों का अवलोकन करते हुए नवागढ़ को सातवीं सदी का क्षेत्र घोषित किया है। यहां प्राकृतिक रूप से निर्मित भौंयरे में अरनाथ स्वामी विराजमान है।

अन्वेषण एवं अन्वेषक :

क्षेत्र निर्देशक ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत भैया ने बताया नवागढ़ की सांस्कृतिक , धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं शैक्षिणिक विधाओं का अन्वेषण देश के ख्याति प्राप्त पुरातत्वविद् एवं इतिहासविद् प्रोफेसर मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी, डॉ शांति स्वरूप सिंहा वाराणसी, डॉ भागचंद्र भागेंदु दमोह, डॉ कस्तूरचंद सुमन, श्री महावीर जी, डॉ बृजेश रावत लखनऊ, डॉ गिरिराज कुमार आगरा, डॉ सलाहुद्दीन सागर, डॉ एस के दुबे झांसी, श्री नरेश पाठक ग्वालियर, डॉ काशी प्रसाद त्रिपाठी, श्री हरि विष्णु अवस्थी टीकमगढ़ के निर्देशन में किया गया है।

संगोष्ठियां :

पंडित गुलाबचंद पुष्प प्रतिष्ठा पितामह के जन्म शताब्दी समारोह पर स्मरणांजलि ग्रंथ का लोकार्पण संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के प्रभावक शिष्य मुनि श्री प्रमाण सागर महाराज के मंगल सानिध्य में इंदौर में किया गया।नवागढ़ क्षेत्र के पुरातत्व इतिहास एवं पुष्प जी के अवदान पर आचार्य श्री उदासागर महाराज के संदेश में इंदौर में एवं दिल्ली, टीकमगढ़, ललितपुर एवं नवागढ़ में पुरातत्व एवं शोधकर्ताओं द्वारा संगोष्ठी का आयोजन नवागढ़ समिति, नवागढ़ गुरुकुलम एवं पुष्प जी के परिवार के सहयोग से संपन्न किया गया। जिसमें 50 से अधिक शोधार्थियों ने भाग लिया।

गुरुकुल :

नवागढ़ में संचालित गुरुकुलम के छात्रों ने रेवाड़ी , खुरई एवं मडिया में प्रवीण सूची में स्थान प्राप्त कर गौरव बढ़ाया है।

अनुरोध :

समिति के अध्यक्ष सनत कुमार एडवोकेट, महामंत्री वीर चंद्र नैकोरा, कोषाध्यक्ष पंडित इंद्र कुमार शास्त्री, गुरुकुल अध्यक्ष राकेश लोटस, उपाध्यक्ष अभय जैन प्रीत विहार, कोषाध्यक्ष डॉ प्रदीप जी छतरपुर, इंजीनियर शिखर चंद्र टीकमगढ़, प्रचारमंत्री डॉ सुनील संचय, धीरेंद्र सिंघई ने सभी से नवागढ़ क्षेत्र में विराजित मनोकामना पूर्ण अतिशय कारी अरनाथ स्वामी के अतिशय तथा यहां संग्रहित पुरा संपदा, गुफाएं, शैलचित्र आदि का अवलोकन करने का निवेदन किया है।

तीर्थक्षेत्र के प्रचारमंत्री डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने बताया कि ललितपुर जिले के महरौनी तहसील स्थित नाबई ग्राम के नवागढ़ प्रागैतिहासिक क्षेत्र में निरंतर अन्वेषण हो रहा है। विगत कई वर्षों से वहां पुरा संपदा के साथ पाषाण कालीन औजारों की श्रृंखला प्राप्त हुई है।

- डॉ सुनील जैन संचय
प्रचारमंत्री- नवागढ़ तीर्थक्षेत्र कमेटी

नवागढ़ की अमूल्य धरोहर

नवागढ़ की अमूल्य धरोहर

मुंबई के २०० वर्ष अतिप्राचीन श्री पार्श्वनाथ स्वामी दिगम्बर जैन देहरासर, गुलालवाड़ी मुंबई में चातुर्मास कलश स्थापना समारोह संपन्न मुंबई में तीर्थक्षेत्र कमेटी की गोलक योजना का शुभारंभ

परम पूज्य प्रज्ञाश्रमण सारस्वताचार्य श्री देवनंदी जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनिश्री अमरकीर्ति जी महाराज एवं मुनिश्री अमोघ कीर्ति जी महाराज का मंगल चातुर्मास श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर देहरासर ट्रस्ट , गुलालवाड़ी में चातुर्मास कलश स्थापना विधि द्वारा संपन्न हुआ। गुलालवाडी चातुर्मास कलश स्थापना में त्रय कलश स्थापित किये गये जिसमें सम्यकदर्शन कलश श्रीमती ताराबेन चंदुलाल दोशी, सम्यकज्ञान कलश श्रीमती ऋषभ दोशी, सम्यकचारित्र कलश श्रीमती चेतना राजुभाई मालवी परिवार को कलश स्थापित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इसी अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से "तीर्थरक्षा कलश" स्थापित किया गया जिसका सौभाग्य श्री वीर शासन प्रभावना ट्रस्ट की अध्यक्षा श्रीमति रूबी किर्तिकुमार डावड़ा (हस्ते श्री अनिक डोटिया) को प्राप्त हुआ साथ ही श्री णमोकार क्षेत्र के नाम से कलश स्थापित करने का सौभाग्य श्री जमनालाल हपावत परिवार को पाप्त हुआ। पावनबेला के इस शुभअवसर पर युगल मुनिराजों के मंगल सान्निध्य में **तीर्थक्षेत्र कमेटी की गोलक योजना को गति प्रदान करते हुए मुंबई में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन देहरासर, गुलालवाडी से गोलक योजना का शुभारम्भ किया गया।**

इस अवसर पर मुनिश्री अमोघकीर्ति महाराज एवं मुनि श्री अमरकीर्ति जी महाराज ने अपने मंगल प्रवचन दिए। मुनि श्री ने णमोकार क्षेत्र पर होने जा रहे भव्य पंचकल्याणक महोत्सव की जानकारी भी दी, इसी अवसर पर णमोकार क्षेत्र से पधारे हुए सभी आतिथ्यों का स्वागत सम्मान भी किया गया।

इस आयोजन में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के संरक्षक श्री आर.के. जैन, पूर्व अध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़िया, उपाध्यक्ष श्री नीलम अजमेरा, महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी, कोषाध्यक्ष एवं गुलालवाडी मंदिर ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री अशोक दोशी सहित सभी ट्रस्टीगण श्री जमनालाल हपावत, श्री जगदीश भाई शाह, श्री दिनेश भाई परोनीगर, श्री वंशीलाल जी देवड़ा, श्री मोतीलाल जी गोटी, श्री केतन भाई शाह, श्री अभयभाई शाह, श्री मगनलाल जी हेमावत, श्री अजित बड़जात्या, श्री रमेश जैन, श्री पंकज दोशी, श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन भुलेश्वर के ट्रस्टी श्री मनोज जैन, श्री सुरेश जैन लायन एवं हजारों की संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन श्री संजय राजा जैन ने किया।

कार्यक्रम में पधारे हुए सभी भक्तों के लिए स्वामी वात्सल्य भोज की व्यवस्था गुलालवाडी मंदिर ट्रस्ट बोर्ड की ओर से की गयी थी।

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान
निर्वाण कल्याणक महामहोत्सव
मुकुट सप्तमी
31 जुलाई 2025 (दिन- गुरूवार)
स्वर्णभद्र कूट चरण
स्वर्णभद्र कूट
घर बैठे चढ़ाऐं निर्वाण लाडू
रू० 2523/- प्रति लाडू
जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान के निवार्ण महामहोत्सव (मोक्ष कल्याणक) दिवस के पावन अवसर पर तीर्थराज श्री सम्मेद शिखरजी में 31 जुलाई 2025 दिन गुरूवार को प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी हज़ारों हजार भक्त स्वर्णभद्र कूट में मनाएंगे मोक्ष सप्तमी, चढ़ाएंगे निर्वाण लाडू ।
(1) ध्वजा रोहण (2) चार कलश 3) अभिषेक-शांतिधारा (4) निवार्ण लाडू (5) पूजन-आरती।
Design by-JainArt@7979703328
नोट :- एक लाडू के लिए दो नाम लिखा जाएगा
नोट - निवार्ण लाडू अर्पित करने का महान पुण्य प्राप्त करना चाहते है तो नीचे दिऐ गये नम्बरों पर अपना नाम लिखवाऐ और दान राशि बैंक खाते में जमा करा कर सूचना देवें ।
नोट :- मुख्य निर्वाण लाडू, ध्वजारोहण, कलश एवं शांतिधारा हेतू सम्पर्क करें - 9534510100, 9411245100
बैंक ऑफ़ इंडिया
Bank of India
खाता संख्या- 480910100002428
IFSC CODE - BKID0004809
BRANCH- PARASNATH
सम्पर्क सूत्र- 7903037270, 9430702400, 9430309610
निवेदक -
जम्बू प्रसाद जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष)
संतोष जैन पेंढारी (राष्ट्रीय महामंत्री)
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2025-27
Jain Tirth vandana, English-Hindi July 2025
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2025-27
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printer, Publisher and Editor UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004. Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 Dadarkar Building, V P Road, C P Tank, MUMBAI-400 004 . Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004.